Chapter-5

===

:: पंचम अध्याय ::

:: शब्द - विचार -2 ::

===

:: पंचम अध्याय ::

:: शब्द-विचार : (2) ::

5.00 : प्रास्ताविक :

चतुर्थ अध्याय में शब्द के विविध रूपों --विभिन्न भाषाओं एवं बोलियों के शब्द ; तत्सम, तद्भव एवं देशज शब्द ; नवीन शब्द-प्रयोग, वर्णमैत्री से युक्त शब्द, ध्वन्यात्मक शब्द, क्रियाओं के नये प्रयोग, नामवाची शब्द, आधुनिक सभ्यता से जुड़े हुए शब्द, नाना विषयों से जुड़े हुए शब्द तथा गुजराती से मिलते-जुलते शब्द -- की विस्तृत एवं सोदाहरण चर्चा की गई है। प्रस्तुत अध्याय में इन्हीं शब्दों के माध्यम से लेखिका ने नाविन्य एवं काव्यत्व की सृष्टि किस प्रकार की है उसे तपासने का (परखने का) एक नम्र प्रयास किया गया है। यद्यपि शिवानीजी लेखिका हैं, परन्तु उनका गद्य भी काव्यमय होता है। उपन्यासों में कविता पढ़ने का आनंद लेना हो तो शिवानीजी, निर्मल वर्मा, शैलेश मटियानी, मोहन राकेश, रावजी पटेल (गुजराती

के प्रसिद्ध कवि एवं उपन्यासकार ‡ जैसे लेखकों को पढ़ना चाहिए ।

प्रस्तुत अध्याय में लेखिका की नूतन भाषाभिव्यंजना को चिह्नित करने का उपक्रम है । लेखिका में यह प्रवृत्ति प्रारंभ से ही तार-स्वरूप उपलब्ध होती है । इसमें नये उपमान , नये रूपक , नये विशेषण , क्रियाओं के नये रूप , नवीन मुहावरों , नवीन प्रतीकों इत्यादि को लिया गया है । इसके कारण भाषा में नवीन अभिव्यंजना की सृष्टि होती है ।"यादों के गज से नापना"[1], "परायेपन की दहलीज "[2] , "तनखवाह की तराजू "[3] "जिद की गुठली"[4] , कटाक्ष का मेग्नेट "[5] आदि शब्द-प्रयोगों में रूपकों के नवीन प्रयोगों के कारण भाषा की शक्ति में अभिवृद्धि ही हुई है । उपन्यास केवल कहानी नहीं है , उसमें भाषागत कला को भी अवकाश होता है , इस तथ्य की प्रतीति ऐसे प्रयोगों द्वारा ही होती है । उपन्यासों की भाषा की इस प्रकार की पड़ताल बहुत आवश्यक है । वस्तुतः भाषाविज्ञान एवं साहित्यिक समालोचना के नये क्षितिज उद्घाटित हो सकते हैं और उनमें निकटता का संबंध विकसित हो सकता है । कोलिन मैकक्केबे ने इस संदर्भ में जो कहा है वह ज्ञातव्य रहेगा -- "इट शुड नाउ बी क्लीअर धेट सच ए कन्सीडरेशन वुड नोट बी ए प्रोलोजोमेनन टु सम पायस इन्स्टिट्युशन युनियन बीटविन लिंग्विस्टिक्स एण्ड लिटररी क्रिटिसिज़्म बट टु एन एनालिसिस आफ लैंग्वैज व्हीच वुड रीकास्ट द एज्युम्सेंस एण्ड डिसिप्लीन्स आफ लिग्विंस्टिक्स एण्ड लिटररी क्रिटिसिज़्म . "[6]

भाषागत सौन्दर्य औपन्यासिक शिल्प में अभिवृद्धि करता है । उससे उसका शिल्पगत सौन्दर्य और भी निखरकर आता है । प्रस्तुत अध्याय में शिवानीजी के उपन्यासों में आगत इस काव्यत्व को शब्दों के माध्यम से चिह्नित किया गया है । यह काव्यत्व कहीं नये उपमानों के कारण आया है , कहीं नये रूपकों के कारण आया है , कहीं विशेषणों के विशिष्ट प्रयोगों के कारण यह संभव

हुआ है , तो कहीं किसी मुहावरे या कहावत को नये ढंग से प्रयुक्त करने के कारण । "कृष्णकली" उपन्यास में कभी कली लौरिन आण्टी के यहां सोने की तस्करी का कार्य करती है थी । एक बार उनकी गाड़ी को रोका जाता है । उन लोगों का ड्राईवर एक सरदारजी था । तब ऐसे समय में भी कली हंसी-मजाक करते हुए , या लापरवाही का नाटक करने के लिए , तलाशी लेनेवाले अफसरों से कहती है — " वाह सरदार-जी आप भी उतर आइए ना । सबसे कड़ी तलाशी इन्हीं की लीजिएगा सर , क्या पता घनी दाढ़ी और जूटे के जटाजूट में सोने की कोई भागीरथी छिपाये बैठे हों । " 7

अभिप्राय यह कि इस प्रकार के प्रयोग उपन्यास में एक अति-रिक्त काव्य-सौन्दर्य की सृष्टि करते हैं , और जो उपन्यास में केवल कथारस नहीं ढूंढते ऐसे सहृदय पाठकों को ऐसे स्थल आकर्षित भी कर सकते हैं ।

5.01 : नये उपमान :

ऊपर निर्दिष्ट किया गया है कि शिवानीजी की भाषा में सहृदय पाठकों को काव्यत्व का आनंद प्राप्त हो सकता है । उनके उपन्यासों में अनेक स्थानों पर , बल्कि प्रत्येक परिच्छेद व पृष्ठ पर ऐसे स्थान मिल सकते हैं जहां उन्होंने नये उपमानों का प्रयोग किया है । यहां ऐसे उपमानों को उपमेय , उपमान तथा पृष्ठसंख्या के क्रम से देने का उपक्रम किया गया है ।

कृष्णकली

§1§ कुष्ठरोग : क्रूर हृदयहीन आक्रमणकारी शत्रु : पृ. 3

§2§ डा. प्रेड्रिक के अनुशासन में पार्वती : तोबड़ा बंधी जंगली घोड़ी: 5

§3§ नासिका : सौन्दर्य का एक मात्र स्तंभ : 7

§4§ बादल : धुनी हुई रुई : पृ. 8

§5§ अंग्रेज : ललमुंही जाति : पृ. 16

§6§ बोली : भाषा की सरस्वती : पृ. 16

§7§ रोबर्टसन की विभिन्न पुत्रियां : नीली आँखें और सुनहले बालों के कई संस्करण : पृ. 18

§8§ दुरूह प्रेम की बारहखड़ी : चीनी वर्णाक्षरी : पृ. 19

§9§ जीवन के कठोर अनुभव : अभिशप्त जीवन-पुस्तिका का एक-एक परिच्छेद : पृ. 19

§10§ अठारह वर्ष की आयु में माणिक और पन्ना के सौन्दर्य की ख्याति : मृगनाभि की कस्तूरी-गमक : पृ. 20

§11§ आज़ादी के पहले की जेल-यात्रा : स्वर्ग का द्वार : पृ. 21

§12§ बड़ी दी का क्रोध : पहाड़ी कोहरा : 27

§13§ पीली कोठी में आनेवाले ग्राहक : बिगड़ैल घोड़े : पृ. 33

§14§ ममत्व का उठना : शराब के झाग का छलक उठना : 61

§15§ मकान का लटका बरामदा : बूढ़े के हिलते दांत : पृ. 68

§16§ सृजन : लौरीन आण्टी की सोने का अण्डा देनेवाली लेगहार्न मुर्गी : पृ. 68

§17§ आधुनिक कलात्मक फ्लेट्स के बीच में लाल ईंटों का सुंदर मकान : आधुनिकाओं की खोखली प्रतिमाओं के बीच घूंघट काढ़े किसी सलज्ज ग्रामवधू का खड़ा रहना : पृ. 71

§18§ गोरखपुर , गोंडा और बलिया : उत्तर प्रदेशका मनचाहा कुंभीपाक : पृ. 87

§19§ कोन्फिडेंशियल रेकार्ड : इहलौकिक सरकारी चित्रगुप्ती लेखा-जोखा : पृ. 87

§20§ लेटी हुई विवियन की आण्टी : मोटर के पहिये के नीचे पिचकी मोटी मेंढ़की : पृ. 93

§21§ सब्जियों का मटमैला सूप : किसीकी धोती को धोकर लाया गया पानी : पृ. 94

§22§ विवियन की आण्टी : विदेशी सेंट की खुली बोटल : पृ. 96

§23§ गुस्सैबाज़ नंगेबाबा : अफ्रीका के रैटल-स्नेक : पृ. 101

§24§ ऐसेम्बली का ऊटपटांग प्रश्न : विषबुझा घातक बाण : पृ. 117

§25§ हिप्पी : शिव की बारात के गण : पृ. 138

§26§ मोडलिंग का काम : निरर्थक मुस्कान बिखेरकर दर्शकोंको रिझाने की थकानप्रद कवायद : पृ. 119

§27§ कली द्वारा किसीको वशीभूत करना : गाल के आकर्षक गढ्ढों की गहराई में गर्व से झूमते मस्त जंगली हाथियों का फंसना : पृ.123

§28§ भांग-चरस की गोली : त्रैलोक्य-दर्शन की गोली : पृ. 146

§29§ कुन्नी का देह : फुटबाल का पिचका ब्लैडर : पृ. 157

§30§ तन्वंगी कली : कपास का फूल : पृ. 157

§31§ गजेन्द्र : बनैला बुंदेलखंडी सुअर : पृ. 159

§32§ गजेन्द्र : त्रिपुर-सा महादानव : पृ. 160

§33§ कली : मधुमदालसा बाल-भैरवी : पृ. 163

§34§ बंगाल में "बीबी" का संबोधन : मिस युनिवर्स की उपाधि :पृ.166

§35§ किसीका प्रभावहीन होते जाना : पोर्टफोलियोविहीन मंत्री हो जाना : पृ. 169

§36§ विदेशी हिप्पी टूरिस्ट : बीरभूम के नरभक्षी कापालिक :पृ. 175

§37§ दामोदर : अदृश्य टेप-रेकोर्डर : पृ. 177

§38§ कली : मखमली पर्शियन बिल्ली : पृ. 177

§39§ काजू : शुतुर्मुर्ग का अण्डा : पृ. 186

§40§ आण्टी द्वारा बनाये मोरैंग : किशोरी का चुंबन : पृ. 218

§41§ कली की डूबी आवाज़ : किसी दूर की मस्जिद के गुम्बद में गूंजती अजान : पृ. 221

चौदह फेरे

§42§ पहाड़की सुंदर स्त्रियां : उर्वशियां : पृ. 11

§43§ अंग्रेज अफसर की चिट्ठी : सोने की चिड़िया : पृ. 3

§44§ शिवदत्त पांडे की दृष्टि : सर्जन की तेज़ छुरी : पृ. 3

§45§ शिवदत्त पांडे का व्यक्तित्व : अपनी जड़ के सहारे खड़ा तमाल-तरु : पृ. 4

§46§ नंदी : परिवार के विशाल जहाज की खलासी : पृ.6

§47§ जाड़ों में पहाड़ों में झरती बर्फ : धुनी हुई रुई : पृ. 6

§48§ चुन्ना , मुन्ना और दीपा के सामने बिस्कुट खाने की कल्पना : अहल्या की कल्पना के स्वर्ग का सिंहासन : पृ. 13

§49§ अपरिचित वातावरण में फंसी अहल्या : बाहर से आकर भटकी हुई फंसी गौरैया : पृ. 16

§50§ कर्नल : कुमाऊं के आगाखान : पृ. 2

§51§ कर्नल : दरिद्र विधवाओं के कल्पतरु : पृ. 2

§52§ नंदी का रिक्त बटुआ : भिखारी का सदा खुला मुंह : पृ. 19

§53§ उन्नीसवीं वर्षगांठ : टीन-एजर्स की अंतिम गोष्ठी : पृ. 28

§54§ रूबी के कर्णफूल : अदृश्य वल्लरी से लटके चेरी के ~~xxxxx~~ गुच्छे : पृ. 30

§55§ बिना बांहों की नीली चोली में मिस दारूवाला का शरीर : कसौटी पर कसी सोने की लीक : पृ. 30

§56§ अहल्या के उपहास का जवाब न देना : शिव के विष की भांति उसे कंठ ही में ग्रहण कर लेना : पृ. 35

§57§ वासना : विकार का सर्प : पृ. 38

§58§ अहल्या के लहराते बाल : कुण्डल किरीट : पृ. 44

§59§ अपमानित मल्लिका : चोट खायी सर्पिणी : पृ. 50

§60§ कुमाऊं प्रदेश : गरीयसी जन्मभूमि : पृ. 54

§61§ जलधारा : धूमिल रिबन : पृ. ~~82~~ 52

§62§ ताई : घर की हाई कमाण्ड : पृ. 55

§63§ बसन्ती के सुंदर दांत : लाल-लाल अधरपुट से झांकते अनारदाने-सी दंत-पंक्ति : पृ. 57

§64§ ताई का कड़क दृष्टि से देखना : तीखी नज़र से बेरहमी के इंजेक्शन देना : पृ. 59

§65§ अहल्या का नींद में किसीके द्वारा झकझोरा जाना : फलों से लदे पेड़ को हिलाना : पृ. 62

§66§ कमरे में सहसा स्तब्धता छा जाना : नेफा की रणभूमि की नीरवता छा जाना : पृ. 72

§67§ सुंदर लड़की को ललचायी नज़रों से देखना : हलवाई की दूकान पर सजी मिष्टान्न की थाली को देखना : पृ. 78

§68§ पैरों की सफेद युगल टखनियाँ : बताशे : पृ. 83

§69§ आलीशान इमारत में छोटी-छोटी खिड़कियाँ : हाथी की आँखें : पृ. 83

§70§ बलखाती कोशी नदी : किसी चतुरा के मोहक अंग-मरोड़ : पृ. 93

§71§ अपरिचित xxxx पगडण्डियाँ : टेढ़ी-मेढ़ी कुण्डली मारकर डंसने को बढ़ रही जहरीली नागिनें : पृ. 105

§72§ अहल्या : तमंचा : पृ. 105

§73§ बाबाकी अवाच्य भद्दी कल्पना : जंगली हिरनों की कुलांचे :पृ.105

§74§ अखरोट : शुतुर्मुर्ग का अण्डा : पृ. 118 / कृष्णकली उपन्यास में यही उपमा काजू के लिए प्रयोजित हुई है । /

§75§ नोनीबाला की काली गोल भुजाओं की चमक : काले कोबरा की चिकनी पीठ : पृ. 158

§76§ xxxxx ऐश-ट्रे में पड़ी राख : सिगारों का xxxxx ध्वंसावशेष : पृ. 159

§77§ गुलाब : नेहरूजी का बटनहोल पुष्प : पृ. 164

§78§ xxxxx कक्काजी का आफिस : व्हाइट-हाउस : पृ. 174

§79§ कान्वेण्ट स्कूल की छोटी बच्चियाँ : हंसती-खिलखिलाती नन्हीं गिलहरियाँ : पृ. 191

§80§ सर्वेश्वर के पत्र में छलकता ओछापन : पानी में तेल का अलग से तैर उठना : पृ. 206

§81§ दहेज : पोटली : पृ. 215

§82§ पंडितजी के कूबड़ का हिलना : तरंगों का उठना-गिरना : पृ. 224

मायापुरी

§83§ शोभा का गान : मार्मिक शब्दावलि से भी अधिक कारुण्य से भरी स्वरलहरी : पृ. 15

§84§ शोभा : मार्बल प्रिंसेस : पृ. 16

§85§ अविनाश की मधुर कल्पना : टूटा खण्डहर : पृ. 28

§86§ सतीश-सविता का विवाह-सूत्र में बंधना : पूर्णिमा के चन्द्र का
काले बादलों से घिर जाना : पृ. 30

§87§ जोधपुरी साफे की कलफ-चढ़ी कलगी : क्रुद्ध नाग का फन : पृ. 42

§88§ शोभा के खुले अधर : ताजे गुलाब की पंखुड़ियां : पृ. 43

§89§ सविता का शोभा को देखना : मुंह का ग्रास छीन ली गई बाघिनी
की भांति देखना : पृ. 44

§90§ राजनीति : सविता की मां की सौत : पृ. 48

§91§ शोभा की आवाज़ : सागर के अन्तस्थल का स्पर्श करती सूर्य-
रश्मि : पृ. 65

§92§ शाम : नींद की छांह में डूबते हुए सूर्य आभा : पृ. 70

§93§ मोह का नशा : मदिरा : पृ. 70

§94§ तिवारीजी का स्वर : कठोर थप्पड़ : पृ. 71

§95§ सतीश के दाम्पत्य में सुख को ढूंढना : आकाश-कुसुम चयन :पृ. 75

§96§ शोभा की आत्मग्लानि और लज्जा : दुःख के अगाध समुद्र में
निस्सहाय तुच्छ तरणी का डिगमिगाना : पृ. 78

§97§ मिट्ठू के गाल : गुदगुदी रूई का टुकड़ा : पृ. 96

§98§ पानी और काई से सड़ी सीढ़ियां : बुड्ढे के दांतों का हिलना
: पृ. 100

§99§ भरी मूंछों का यत्नपूर्वक कसा-संवरा रहना : नयी दुल्हन का
कसा-संवरा रहना : पृ. 114

§100§ शोभा की सूखी देह का स्नेहमयी रानीजी की छत्रछाया में
पनपना : श्रावण की वर्षा से वन-लता का पल्लवित होना
: पृ. 118

§101§ कर्मचन्द और राजासाहब : नहला-दहला की क्रूर जोड़ी : पृ. 132

§102§ नर्स : मृत्यु की प्रहरी : पृ. 159

§103§ दिल्ली : विशाल मायापुरी : पृ. 160

कालिन्दी

§104§ देवदार के वृक्ष : सतर सिपाही : पृ. 11

§105§ गरुड़ की घाटी : आसन्नप्रसवा अलस युवती : पृ. 11

§106§ अल्मोड़ा शहर की गंध : नवजात शिशु की मीठी खुशबू : पृ. 20

§107§ सोने का बिस्कुट : निखालिस सोने की बासमती : पृ. 25

§108§ नेहा : अटूट स्वास्थ्य की स्वामिनी : पृ. 25

§109§ उल्लू : दुर्दान्त पाहुना : पृ. 29

§110§ जीर्ण जंग लगा ताला : वयःभार नमित वृद्ध के लटके दांत :पृ. 70

§111§ कालिन्दी-माधवी का साथ चलना : दिन-रात का साथ होना : पृ. 91

§112§ विदेशी मेम : लम्बे खजूर का फल : पृ. 106

§113§ विदेशी मेम से विवाह का दुःसंवाद : पिता की छाती में हथगोला मारना : पृ. 107

§114§ "रामनाम सत्य है " का उद्घोष : दुःसाहसी दस्यु : पृ. 112

§115§ होठों पर आई क्षणिक हंसी का सूख जाना : गरम तवे पर छनछनाती पानी की बूंद : पृ. 127

§116§ पलक की गई भ्रमर : धनुष्य की प्रत्यंचा : पृ. 130

§117§ डी.डी.ए. के मकान : आधुनिक घरौंदे : पृ. 138

§118§ पहाड़ी लड़के : बालशिंगाड़ी मिठाई : पृ. 151

§119§ उज्ज्वल दंत-पंक्ति : विद्युत-वाहिनी : पृ. 167

§120§ छत की बल्लियां : लटकते वट-प्ररोह : पृ. 197

§121§ पिरीमामा वैद : कुमाऊं के बाबा आम्टे : पृ. 200

§122§ वर्जा के उपालंभ : कंठ के गह्वर : पृ. 206

§123§ वसंतमामा का कठोर स्वर : चाबुक : पृ. 220

§124§ कालिंदी का सौन्दर्य : अमृतवृद्धि करता शरद-पूर्णिमा का चन्द्र : पृ. 220

कृष्णवेणी

§125§ अंग्रेज सिपाही : गोरे मर्कट : पृ. 13

§126§ शांतिनिकेतन के छात्र : मधुलोलुप भौंरे : पृ. 20

§127§ भास्करन : चीन की दीवार-सा व्यक्ति : पृ. 24

§128§ भास्करन : रवि वर्मा का पुनर्जन्म : पृ. 24

§129§ कृष्णवेणी : कोई जिद्दी मक्खी : पृ. 27

§130§ कृष्णवेणी : सिरफिरी सिंहिनी : पृ. 27

§131§ कृष्णवेणी : सोने के अण्डे देनेवाली बतक : पृ. 28

§132§ कुष्ठरोगी का होंठविहीन बीभत्स चेहरा : कटहल का छिलका
: पृ. 34

कस्तूरी मृग

§133§ करुणा से विगलित अम्मा : किसी देवालय में प्रतिष्ठित साक्षात्
अष्टभुजा की प्रतिमा : पृ. 16

§134§ नन्हे की विमाता : भक्तिरस में आपाद-मस्तक डूबी जा रही
xशैशैशब भक्तिन : पृ. 16

§135 § कोम्पीटीशन परीक्षा का फल : अफसरी रथ के xx सप्ताश्व
: पृ. 19

विषकन्या

§136§ विक्टोरियन सोफा : उध्वस्त जहाज : पृ. 13

§137§ भारी पर्दों की नन्हीं घंटियों से टकराती दृष्टि : अबाध्य
वन्य शाखामृग : पृ. 13

§138§ कर्णफूलों की अपूर्व आभा : पाटल-प्रसून के गर्भ-केसर कक्ष में तेज़
बल्ब को जलाना : पृ. 19

§139§ रोहित का पल-पल में लाल पड़ता और बुझता चेहरा : नियोन
रंगीन बत्तियों के प्रकाश में चमकता शिष्ट सौम्यता का विज्ञापन :
: पृ. 25

§140§ नैनिताल की संध्या : उष्ण जलवायु में जनमी-पली किशोरी का
यौवन : पृ. 26

§141§ विषबुझी दृष्टि : शत्रुपक्ष का शक्तिशाली टारपीडो : पृ. 30

§142§ डिसूजा : पक्षी लोलुप बिल्ला : पृ. 33

§143§ दीदी के हिसाब : शत्रुपक्ष की इनफेंट्री के सधे निशानेबाज गनर्स बने घातक बम-गोले : पृ. 45

§144§ आकाश : विपत्तिकाल का मित्र : पृ. 55

माणिक
=====

§145§ बिन्नू : /नलिनी की बहन रंभा का छोटा-सा पुत्र / : नलिनी की मरुभूमि-सी शुष्क बंजर धरणी का एक मात्र ओएसिस : पृ. 29

§146§ नलिनी का शांत कण्ठ-स्वर : पानी में भीगा लपलपाता चाबुक : : पृ. 30

§147§ नलिनी का संगीत सीखती रंभा के पास बैठना : उद्धत फन किए गुप्त धन को सेंकता कोई सतर नाग : पृ. 32

§148§ रंभा का अविवाहित अवस्था में गर्भवती होना : कौमार्य का रहस्यमय पाण्डुरोग : पृ. 35

§149§ रंभा : बादशाह की घोड़ी : पृ. 36

§150§ रमेन्द्र की खोखली हंसी : किसी देवालय के गूढ़ गर्भ में गूंजती घण्टा-ध्वनि : पृ. 46

§151§ रंभा का चिखना : क्रुद्ध पद्मनाग का फन छू लेना : पृ. 48

तर्पण
====

§152§ पुष्पा का कुत्ता : असली रेशम का चिकना गोला : पृ. 50

§153§ पुष्पा की काली घुंघराली रेशमी लट : अनुशासनप्रिय कठोर पिता की उंगली छुड़ाकर भाग आया अबोध बालक : पृ. 53

§154§ इतवार : कार्यरत जीवन का अभिशाप : पृ. 57

§155§ अपढ़ भोला व्यंग्य : देशी उस्तरे की तीखी धार : पृ. 60

§156§ पुष्पा के माथे पर लगा कलंक का टीका : गोदने की अमिट स्याही : पृ. 69

§157§ नित्य के झुके मस्तक का तनकर ऊपर उठना : वर्षाऋतु में सहसा ऊपर उठ आया सर्पगन्धा का फन : पृ. 70

§158§ पुष्पा की नौकरानी खिमुली का विलाप : श्रिश्रहिx टिट्टिट भ
का करुण स्वर : पृ. 82

भैरवी
====

§159§ अश्वत्थ के धूमिल वृक्ष : मौन साधक : पृ. 5

§160§ काली कोठरी : मालगाड़ी के बन्द डिब्बे-सी संकरी गुफा : पृ. 6

§161§ अवधूत की अद्भुत हंसी : ऊंची पर्वतश्रेणी से किसीके द्वारा बड़ी-सी
शिला को लुढ़काना : पृ. 12

§162§ मायादीदी का स्वर : पुरुष कंठ-स्वर की वज्रहुंकार : पृ. 15

§163§ मायादीदी द्वारा× द्वारा परिपाटी से संवारा गया जटाजूट
और उसमें लगा धतूरे का पुष्प : विराग के रेगिस्तान में यत्न
से बनाए गए नखलिस्तान : पृ. 16

§164§ एक मृत स्त्री : गौर-चरणयुगल की स्वामिनी : पृ. 26

§165§ चरन का मायादीदी को चरस के लिए चिढ़ाना : क्रीड़ा-प्रेमी
स्वामी द्वारा पालतू कुत्ते को हड्डी के लिए लुभाना : पृ. 37

§166§ चन्दन : सुख के पेगों में झूलती भाग्यवती भतीजी : पृ. 38

§167§ राजराजेश्वरी : विसर्जन के लिए डोले में ले जाई जा रही
नंदादेवी की प्रतिमा : पृ. 39

§168§ मां की धमकी : रेत में पड़ी पानी की बूंद : पृ. 41

§169§ वर्षों की भूली-बिसरी स्मृतियां : कण्ठ में अटकी कुनैन की
गोलियां : पृ. 57

§170§ चन्दन के नन्हें खुले होंठ : पाटल की मुंदी कली : पृ. 58

§171§ पग-पग पर चोट खाया राजेश्वरी का चित्त : पागलखाने में
बिजली से झटकाये गये रोगी का चित्त : पृ. 58

§172§ पहाड़ियों के लिए माघ महीना : अवांछित अतिथि : पृ. 71

§173§ वार्षिक किस्तों में दी गई ऊंची फीस : भविष्य का सुनहला
जीवन बीमा : पृ. 86

§174§ कटुबात : अग्निबाण : पृ. 100

पाथेय

§175§ लोहनीजी : तिलोत्तमा के कठोर प्रहरी : पृ. 102

§176§ प्रतुल : मृत्युपथ का पथिक : पृ. 109

§177§ विदेशी घड़ी : नन्हीं-सी चिरैया : पृ. 109

§178§ राजरोग की रक्तिम आभा की मरीचिका : ट्यूबरक्युलर फ्लेश : पृ. 109

§179§ तिलोत्तमा के बाल : नाइग्रा फाल्स : पृ. 111

§180§ प्रतुल की मृत्यु : तिलोत्तमा की सौत : पृ. 113

§181§ प्रतुल की स्मृतियां : अमूल्य सुवर्ण-मुहरों की गागर : पृ. 129

§182§ विनायक का ज्वर : घातक कर्कट का पंजा : पृ. 135

श्मशान चम्पा

§183§ छलनामय मृत्यु : बिल्ली के क्रूर पंजों में दबी चुहिया : पृ. 5

§184§ विपत्ति का मेघखण्ड : गृहस्वामी का सस्पेंशन : पृ. 8

§185§ प्रतिष्ठित परिवारों के संस्कार : नवीन युग की तीव्र धारा में असहाय तिनका : पृ. 13

§186§ मैके का परिचित जीर्ण-शीर्ण मकान : वर्षों से बिछड़ा दरिद्र आत्मीय : पृ. 25

§187§ मैके का पुराना मकान : महीनों से दाढ़ी न बनाई हो ऐसा बीमार बूढ़ा : पृ. 26

§188§ विजिलेंस : दुष्ट ग्रह : पृ. 29

§189§ प्रिमरोज़ की लम्बी लता : ढीठ बालिका : पृ. 30

§190§ खिड़की की तीन बल्लियां : किसी वृद्ध की भग्न दंत-पंक्ति :पृ.30

§191§ एक साड़ी में लिपटी चांदमनी की बांहें : नग्न भुजxxxxxx भुजवल्लरियां : पृ. 41

§192§ मि. सेनगुप्त : अकारण ही लाठी से पीट दिया गया कोई पालतू कुत्ता : पृ.

§193§ चम्पा का मि. सेनगुप्त की कोठी में रात बिताना : अशोक-

§x●4§xx वाटिका में रहना : पृ. 54

§194§ रूपकी की हंसी : विषबुझा तीर : पृ. 79

§195§ मयूरी का दर्पिला चेहरा : शुतुरमुग की ऐंठी गरदन : पृ. 88

§196§ चांदमनी : स्वामीभक्त बुलडाग : पृ. 89

§197§ फेफड़े का एक्स रे : फेफड़े की चित्रलिपि : पृ. 89

§198§ चांदमनी का गाना : ठण्डी सुशीतल बयार : पृ. 90

§199§ सुंदरी कमलेश्वरी : मूक चित्रों के युग का स्मृति-चिह्न : पृ. 92

§200§ चम्पा का जूही के प्रति वात्सल्य उमड़ना : मृतवत्सा गाय का रम्भाना : पृ. 96

§201§ चम्पा की चादर-ढकी सिसकियों से कांपती देह : सड़क पर बाजीगरी का तमाशा दिखा रहे किसी बाजीगर के जमूरे की कटी तड़पती देह : पृ. 107

§202§ चम्पा की दर्द से लटकी देह : तीव्र आंधी के वेग से दुहरा हो गया बेंत का लचीला पेड़ : पृ. 108

§203§ मधुकर का असाध्य रोगिणी चम्पा को लेकर घर आना : दक्ष-यज्ञ से सती के मृतदेह को लटकाए शिव का आना : पृ. 109

§204§ वक्ष पर पड़ी सोने की चेन : स्वर्णिम फेनिल तरंग : पृ. 110

§205§ अक्षत कौमार्य की मादक सुगंध : महुआ की मदीली पुष्पगंध : पृ. 110

§206§ जया के मौलिक सम्बोधन : /चम्पा के लिए / वृश्चिक के डंक : पृ. 115

§207§ चम्पा : मधुकर के सुव्यवस्थित जीवन में आयी वैशाखी : पृ. 117

§208§ मधुकर के क्रोधी पिता : निरभ्र आकाश में उदित धूमकेतु : पृ. 131

उक्त उपन्यासों के अतिरिक्त "गैंडा", "कैंजा", "उपप्रेती, "दो सखियां", "विवर्त", "सुरंगमा", "तीसरा" बेटा" प्रभृति उपन्यासों में भी ऐसे कई उपमान प्राप्त होते हैं। यहां एक तथ्य ध्यातव्य

रहे कि जहां ये उपमान सहज , अनायास , स्वाभाविक रूप से आये हैं वहां शिवानीजी की गद्यशैली ने एक प्रांजल रूप धारण किया है ; परंतु जहां भी उन्होंने उसके लिए दूर की कौड़ी लाने का या द्राविड़-प्राणायम का प्रयत्न किया है वहां उनकी भाषाशैली चीनी वर्णाक्षरी की भांति दुरूह हो गयी है ।

नये रूपक : (5.02)
=======

रूपकों के प्रयोग से भी भाषाशैली आकर्षक , सरस तथा काव्यात्मक हो जाती है । उसके कारण कुछ उपन्यास कई बार विशेष रूप से पठनीय हो जाते हैं । डा. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय ने "हिन्दी उपन्यास : कुछ उपलब्धियां" नामक उनके औपन्यासिक आलोचना के ग्रंथ में निर्मल वर्मा द्वारा प्रणीत उपन्यास " वे दिन " के कथ्य की कटु आलोचना की है , परंतु उसकी भाषा को लेकर वे भी अभिभूत हो गये हैं । " सारा उपन्यास एक काव्य है और संगीतात्मकता का बोध देता है । इतना सरस प्रवाह ` आधुनिकता ` से अभिशप्त हिन्दी के उपन्यासों में कम ही देखने को मिलता है । भाषा की सक्षमता तो निर्मल वर्मा की कहानियों में पहले ही सिद्ध हो चुकी थी , इस उपन्यास में वह अधिक निखरे रूप में सामने आती है । प्रत्येक शब्द जैसे सूक्ष्म संवेदनाओं के चित्र सामने उपस्थित करता है और सारा उपन्यास जैसे बोलता हुआ प्रतीत होता है । " [8] ठीक इसी तरह शिवानीजी के उपन्यासों में उनकी गद्यशैली की काव्यात्मकता पाठकों को बरबस आकर्षित करती है । रूपकों के नये प्रयोगों के कारण भाषा में यही काव्यात्मकता का समावेश होता है । यहां पर भी जो अति रूढ़ हो गये हैं ऐसे रूपकों को न लेकर , केवल उन्हीं को लिया गया है , जिनमें किसी-न-किसी प्रकार की कोई नवीनता चिन्हित होती है ।यहां जिन रूपकों को संकलित किया गया है , उनमें रूपक , उपन्यास का नाम तथा पृष्ठ-संख्या का निर्देश क्रमशः हुआ है ।

§1§ पौरूष का नाग : कृष्णकली : पृ. 6

{2} सौन्दर्य की लाठी : कृष्णकली : पृ. 18

{3} मुग्ध दृष्टियों के नुकीले बाण : वही : पृ. 19

{4} कटाक्ष का मैग्नेट : वही : पृ. 19

{5} कैशोर्य की सीढ़ी : वही : पृ. 19

{6} खांसी का चाबुक : वही : पृ. 27

{7} गृहस्थी का कोल्हू : वही : पृ. 29

{8} अनुशासन की रस्सी : वही : पृ. 35

{9} ठेकेदारों की धनराशि की नहरें : वही : पृ. 37

{10} मनो-मालिन्य के लोहे की दीवार : वही : पृ. 47

{11} छल-कपट की चकरघिन्नियां : वही : पृ. 56

{12} मूक दृष्टि का उपालंभ : वही : पृ. 60

{13} स्वच्छ हंसी का दर्पण : वही : पृ. 122

{14} उच्च नौकरी का राज-सिंहासन : वही : पृ. 125

{15} ईर्ष्याग्नि की चिनगारियां : वही : पृ. 125

{16} गृहयुद्ध की चिनगारी : वही : पृ. 129

{17} कर्णचुम्बी आंखों का सधा कटाक्ष : वही : पृ. 133

{18} पिता के ~~वैभव~~x वैभव की बैसाखियां : वही : पृ. 133

{19} हृदय-द्वार की कठिन अर्गला : वही : पृ. 133

{20} प्रभाव का चेक : वही : पृ. 133

{21} सरप्राइज़ का तोहफा : वही : पृ. 135

{22} कस्टम का दुरूह चक्रव्यूह : वही : पृ. 146

{23} मनहूस चुप्पी की हिमशिला : वही : पृ. 168

{24} संयम और दर्प की दीवार : वही : पृ. 188

{25} संयम ~~सौन्दर्य~~ और दर्प की दीवारों को सौन्दर्य डायनामाइट से उड़ाना : सांग रूपक : वही : पृ. 188

{26} कैशोर्य की मरीचिका : वही : पृ. 200

{27} प्रश्न-गुलेल का रबर : वही : पृ. 205

{28} हनीमून की हद : वही : 209

{29} यौवन का उत्कोच : वही : पृ. 212

§30§ स्मृतिद्वार का जंग लगा ताला : सांग रूपक : वही : पृ. 214

§31§ नदी की कच्ची कगार पर खड़ा विवेक-विटप : परंपरित रूपक : वही : पृ. 217

§32§ रोग-भुजंग : वही : पृ. 218

§33§ खांसी का सिग्नल : वही : पृ. 219

§34§ प्रश्न के तलवार का वार : परंपरित रूपक : वही : पृ. 220

§35§ एकान्त का धुंधलका : वही : पृ. 222

§36§ कुल-गोत्र का वीसा : वही : पृ. 227

§37§ स्मृति के नथने : चौदह फेरे : पृ. 8

§38§ वासना की भट्ठी में अश्लील गालियों का कोयला : परंपरित रूपक : चौदह फेरे : पृ. 11

§39§ संयम की शिला से विवेक के स्तंभ का ढह जाना : सांग रूपक : चौदह फेरे : पृ. 2

§40§ विवेक का तराज़ू : चौदह फेरे : पृ. 3

§41§ विवेक की लगाम : वही : पृ. 5

§42§ चिलम का इंजन : वही : पृ. 6

§43§ हृदय का ताला : वही : पृ. 26

§44§ यौवन की जादुई छड़ी : वही : पृ. 34

§45§ प्रश्न का करारा चांटा : वही : पृ. 54

§46§ हंसी के मंजीरे : वही : पृ. 86

§47§ बात की पुड़िया : वही : पृ. 122

§48§ अधैर्य की सीटियां : वही : पृ. 143

§49§ हंसी का दर्पण : वही : पृ. 164

§50§ उत्कोच का दरिया : वही : पृ. 167

§51§ विस्मृति का मोटा काला पर्दा : वही : पृ. 169

§52§ परिहास की कड़ी चोट : वही : पृ. 171

§53§ डिप्लोमेसी की कुटिल चाल : वही : पृ. 180

§54§ विद्या की गठरी : वही : पृ. 180

§55§ वासना के अंगारे : बहरे चौदह फेरे : पृ. 186
§56§ जिम्मेदारियों का चक्रव्यूह : वही : पृ. 187
§57§ कल्पना का भव्य दुर्ग : वही : पृ. 189
§58§ लजीली पलकों का शासन : वही : पृ. 191
§59§ भाग्य के घोड़े की बागडोर संभालना : सांग रूपक : वही : पृ. 207
§60§ तक-वितर्क की पोटली : वही : पृ. 223
§61§ देहाती घूंघट की यवनिका : गैंडा : पृ. 9
§62§ पाउडर का प्रहार : गैंडा : पृ. 10
§63§ प्रश्न का जहर : वही : पृ. 13
§64§ वैवाहिक जीवन का अखाड़ा : वही : पृ. 14
§65§ गृहस्थी की शांत झील : वही : पृ. 19
§66§ सहानुभूति का गह्वर : वही : पृ. 22
§67§ निर्लज प्रेम की सहस्त्र तरंगें : वही : पृ. 30
§68§ प्रतिशोध की तीव्र दहन : वही : पृ. 32
§69§ वयस का व्यवधान : कैंजा : पृ. 8
§70§ स्मृतियों की अर्गला : वही : पृ. 10
§71§ भावुकता का क्षणिक आवेश : वही : पृ. 12
§72§ अनुमान का ढेला : वही : पृ. 16
§73§ वैधव्य-तक्षक : वही : पृ. 19
§74§ अनुशासन का अंकुश : वही : पृ. 21
§75§ यौवन के स्पष्ट हस्ताक्षर : वही : पृ. 28
§77§ क्षय का तक्षक : उपप्रेती : पृ. 10
§78§ जमानत की उदार ढाल : वही : पृ. 15
§79§ वैधव्य की मरीचिका : वही : पृ. 21
§80§ कालसर्प के डंक : वही : पृ. 26
§81§ व्यंग्य की प्रत्यंचा : वही : पृ. 16
§82§ शैशव की धरणी : दो सखियां : पृ. 37
§83§ शैशव की धरणी पर मैत्री के अंकुर : सांग रूपक : वही : पृ. 37

§84§ अहंकार का पसीना : दो सखियां : पृ. 38

§85§ वार्ध्यक्य की देहरी : वही : पृ. 42

§86§ जिह्वा के चाबुक : वही : पृ. 46

§87§ अतीत की टंकी : वही : पृ. 48

§88§ अफवाहों के फाये : वही : पृ. 54

§89§ विपत्ति का मेघखण्ड : श्मशान चम्पा : पृ. 8

§90§ अक्षम्य अपराधों का घटाटोप : वही : पृ. 8

§91§ रहस्य की चादरें : वही : पृ. 8

§92§ छात्रवृत्ति की बैसाखियां : वही : पृ. 10

§93§ तिमिर का धूमिल आवरण : वही : पृ. 15

§94§ हंसी की फुलझड़ी : वही : पृ. 17

§95§ क्रोध की तड़ित : वही : पृ. 17

§96§ जीवन के xxxx शून्याकाश में एकाकिनी तारिका-सी टिमटिमाती : सांग रूपक : वही : पृ. 23

§97§ अविश्वास की आरी : पृ. 24

§98§ प्रौढ़-जीवन की धूसर गोधूली : वही : पृ. 28

§99§ दुर्भाग्य का काला मेघखण्ड : वही : पृ. 37

§100§ सगाई की xxxx नौटंकी : वही : पृ. 38

§101§ स्मृतियों का बोझ : वही : पृ. 60

§102§ नौकरी का कांवर : वही : पृ. 65

§103§ स्मृति-गह्वर : वही : पृ. 71

§104§ प्रश्न-धनु की डोरी : वही : पृ. 79

§105§ तृष्णा की डोर : वही : पृ. 78

§106§ कैशोर्य की लुनाई : वही : पृ. 82

§107§ प्रशंसा की छींटाकशी : वही : पृ. 83

§108§ कल्पना का मसाला : वही : पृ. 83

§109§ नृत्य का अंगूरी आसव : वही : पृ. 98

§110§ संयम की भीमशिला : वही : पृ. 101

§111§ गालियों का गुलदस्ता : वही : पृ. 114

(112) जीवन की काल-बैसाखी : श्मशान चम्पा : पृ. 116

(113) अविवेक की घाटी : वही : पृ. 117

(114) दुर्भाग्य का धक्का : वही : पृ. 125

(115) विवेक की न्याय-तुला : वही : पृ. 127

(116) कठोरवाणी का गण्डा : वही : पृ. 129

(117) क्षय का तक्षक : विवर्त : पृ. 9

(118) रूखे प्रश्न का चांटा : विवर्त : पृ. 12

(119) सौभाग्य के अवरुद्ध कपाट : वही : पृ. 24

(120) कंघी का चाबुक : वही : पृ. 22

(121) यौवन का कफ़न : वही : पृ. 34

(122) स्नेहपूर्ण चुंबन के अंगारे : वही : पृ. 45

(123) कठोर प्रश्नों की मशीनगनी बौछार : वही : पृ. 43

(124) संस्कारों की रेजगारी : वही : पृ. 48

(125) छलना का विवर्त : वही : पृ. 50

(126) ~~अविवेक~~ अविवेक की ठोकर : तीसरा बेटा : पृ. 73

(127) कुतूहल की सहस्त्र किरणें : सुरंगमा : पृ. 6

(128) वयस की मरीचिका : वही : पृ. 7

(129) अनुशासन का चाबुक : वही : पृ. 10

(130) पलायन की चादर : वही : पृ. 18

(131) तीखी दृष्टि का चाबुक : वही : पृ. 33

(132) चुप्पी का बादल : वही : पृ. 36

(133) हंसी का धन्यवाद : वही : पृ. 45

(134) विवशता की सिसकी : भैरवी : पृ. 6

(135) विराग का रेगिस्तान : वही : पृ. 16

(136) मनोबल की बैसाखियां : वही : पृ. 13

(137) आंखों का भाला : वही : पृ. 17

(138) वैराग्य का तहखाना : वही : पृ. 19

(139) सौभाग्य-कल्पतरु : वही : पृ. 26

{140} अतृप्त वासना के दग्ध अंगारे : भैरवी : पृ. 36

{141} स्मृतियों के सागर का ज्वार-भाटा : सांग रूपक : वही :पृ. 37

{142} जबान का [illegible] सलोना छौंक : वही : पृ. 38

{143} वैधव्य-रिपु : वही : पृ. 39

{144} ईर्ष्या-डंक : वही : पृ. 39

{145} शिखा-सूत्र का झोला-थैला : वही : पृ. 45

{146} संधानी दृष्टियों की हथकड़ियां : वही : पृ. 19

{147} जिज्ञासा की छुर्रियां : वही : पृ. 26

{148} महाप्रस्थान की राही चूनर : वही : पृ. 27

{149} स्मृतियों का सागर : वही : पृ. 37

{150} विस्मृति-कलंक का हथगोला : वही : पृ. 39

{151} रुईसी का सूर्य : वही : पृ. 41

{152} अभाव का मेघखण्ड : वही : पृ. 41

{153} यौवन की रत्नगर्भा मंजूषा : वही : पृ. 45

{154} चक्रव्यूह की कठिन मोर्चाबन्दी : वही : पृ. 45

{155} कलंक-कथा का अभिशप्त पृष्ठ : परंपरित रूपक : वही :पृ. 48

{156} मुस्कान का मधु : वही : पृ. 49

{157} अतृप्त यौवन की उद्दाम स्मृतियां : वही : पृ. 51

{158} सौन्दर्य के [illegible] चिकने पत्थर : वही : पृ. 52

{159} खतरनाक आंखों का डमरू : वही : पृ. 53

{160} छलकपट की धोखाधड़ी : वही : पृ. 53

{161} गृहस्थी का पाग : वही : पृ. 55

{162} गुरुमंत्र की गायत्री : वही : पृ. 51

{163} प्रेमदुर्ग की सुरंग : वही : पृ. 53 / सांग-रूपक /

{164} गृहस्थी की सुदृढ़ चट्टान : वही : पृ. 53

{165} स्मृतियों के प्रेत-कंकाल : वही : पृ. 55

{166} स्मृतियों का खोया खजाना : वही : पृ. 55

§167§ कैशोर्य के दुर्बलता की खरोंच : भैरवी : पृ. 58

§168§ कैशोर्य का दर्पण : वही : पृ. 59

§169§ मैत्री की डोर : वही : पृ. 60

§170§ विदेशी शिष्टाचार का ठसका : वही : पृ. 61

§171§ संस्कारों की सिहरन : वही : पृ. 62

§172§ वयस का माइलस्टोन : वही : पृ. 62

§173§ असंयम की स्याही : वही : पृ. 62

§175§ अतीत की डोरी : वही : पृ. 63

§176§ बीते शैशव की ~~[illegible]~~ पगडण्डी : वही : पृ. 66

§177§ अनुशासन चूर्ण की चुटकी : वही : पृ. 71

§178§ कहकहों का जलवा : वही : पृ. 74

§179§ झूठ का खोखलापन : वही : पृ. 75

§180§ धन्यवाद के पुष्पहार : वही : पृ. 78

§181§ आकर्षक स्मित की प्रत्यंचा : वही : पृ. 78

§182§ शंका का भूत : वही : पृ. 78

§183§ सभ्यता की छूत : वही : पृ. 79

§184§ आँखों का अंकुश : वही : पृ. 80

§185§ गुडमोर्निंग / गुडनाईट के गुलदस्ते : वही : पृ.

§186§ समृद्धि की नहर : वही : पृ. 85

§187§ अधूरी शिक्षा की पोटली : वही : पृ. 85-86

§188§ विदेशी फर्म का राजसी ग्रास : वही : पृ. 86

§189§ शर्त की हर्डल : वही : पृ. 86

§190§ विवेक का तराजू : वही : पृ. 91

§191§ वनस्पति घी की मरीचिका : वही : पृ. 94

§192§ ईर्ष्याग्नि की ज्वाला : वही : पृ. 100

§193§ ठहाकों की मार : वही : पृ. 100

§194§ कैशोर्य की सीढ़ियाँ : वही : पृ. 112

(195) तारुण्य का सिंहासन : भैरवी : पृ. 102

(196) नयी गृहस्थी का तंबू : वही : पृ. 106

(197) वैराग्य-कंदरा : वही : पृ. 107

(198) आदेश का चाबुक : वही : पृ. 112

(199) विकार-ब्याल : वही : पृ. 112

(200) संदिग्ध दृष्टि का अग्निबाण : वही : 117

(201) योगबल की खुर्दबीन : वही : पृ. 120

(202) वेदना का उफान : वही : पृ. 126

(203) रूप की चिनगारी : वही : पृ. 127

(204) चेतना का धुंधलका : वही : पृ. 130

(205) फुसफुसाहट की बारूद का का अपने कंठ की बुलंद तोप में
गोला बनाना : परंपरित रूपक : वही : पृ. 131

(206) अव्यक्त छंद की प्रसव-वेदना : पाथेय : पृ. 97

(207) अतीत का पृष्ठ : वही : पृ. 104

(208) मिष्टान्नों का असीम उदधि : वही : पृ. 105

(209) दरार का औदार्य : वही : पृ. 107

(210) यौवन का उद्दाम वेग : वही : पृ. 119

(211) वासना की लपटें : वही : पृ. 121

(212) स्मृति का गह्वर : वही : पृ. 126

(213) वैधव्य का दुःसंवाद : वही : पृ. 127

(214) पत्रों की मरीचिका : वही : पृ. 139

(215) मुँह का xxx गह्वर : कृष्णवेणी : पृ. 7

(216) भीड़ का चक्रव्यूह : कृष्णवेणी : पृ. 8

(217) गांभीर्य की लक्ष्मणरेखा : वही : पृ. 22

(218) साहित्य का सुरम्य नंदन-कानन : वही : पृ. 22

(219) चेहरे की दुरूह लिपि : वही : पृ. 23

(220) मुस्कान-रहस्य : वही : पृ. 25

(221) फटकार का चाबुक : वही : पृ. 31

(222) नथुनों के गह्वर : कृष्णवेणी : पृ. 32

(223) बातों के लच्छे : वही : पृ. 32

(224) अतीत का रुद्ध कक्ष : वही : पृ. 38

(225) स्मृतियों का गह्वर : वही : पृ. 9

(226) धोबीघाट का विशाल उदधि : वही : पृ. 45

(227) वैभव का तुंग शिखर : कस्तूरी मृग : पृ. 9

(228) रहस्यमय गांभीर्य का चंदोवा : वही : पृ. 11

(229) वैभव का सूर्य : वही : पृ. 14

(230) विलक्षण गायकी की लौह-बेड़ियां : वही : पृ. 15

(231) स्मृति का तुरपन : वही : पृ. 16

(232) स्मृति-अर्गला : वही : पृ. 17

(233) संयम का दुर्ग : वही : पृ. 18

(234) संपत्ति का चुंबक : वही : पृ. 19

(235) परिहास की सहस्त्र किरणें : वही : पृ. 32

(236) प्रतिहिंसा की उद्दाम लपटें : वही : पृ. 35

(237) रियाज की धमनियां : वही : पृ. 36

(238) प्रतिहिंसा की दावाग्नि : वही : पृ. 36

(239) परिचय की संध्या : विषकन्या : पृ. 7

(240) दिव्य स्मित का जाल : विषकन्या : पृ. 7

(241) गांभीर्य की लक्ष्मणरेखा : वही : पृ. 13

(242) संदिग्ध दृष्टि का मूक-प्रश्न : वही : पृ. 14

(243) घ्राणशक्ति का सात्विकी चौका : वही : पृ. 14

(244) काल्पनिक भोग का आनंद : वही : पृ. 14

(245) पाटल-प्रसून के गर्भ-केसर कक्ष : वही : पृ. 19

(246) ईर्ष्या का अंकुर : वही : पृ. 22

(247) सांवरे स्मित का चाबुक : वही : पृ. 25

(248) अपराधी चित्त की गठरी : वही : पृ. 26

(249) कनखियों के कपाटों की दरार : वही : पृ. 28

(250) सहवास का कांवर : विषकन्या : पृ. 31

(251) गहरी नींद की घाटी : वही : पृ. 32

(252) चितवन का मूक प्रश्न : वही : पृ. 38

(253) स्वागत का मदमाता जाम : वही : पृ. 39

(254) अश्लिल मजाक चाबुक : वही : पृ. 39

(255) सोपान की मरीचिका : वही : पृ. 40

(256) विषम परिस्थितियों के गेहूं में घुन की तरह पिस जाना :
: परंपरित रूपक : वही : पृ. 43

(257) गृहस्थी का गोरखधंधा : वही : पृ. 49

(260) मधुर आह्वान का इन्द्रजाल : वही : पृ. 51

(261) प्रेम का लाइफब्बोय : वही : पृ. 51

(262) वेदना का ज्वार-भाटा : वही : पृ. 55

(263) उदासीनता का मकड़ीजाला : माणिक : पृ. 19

(264) वैभव की परतें : माणिक : पृ. 19

(265) मैत्री की आरी : माणिक : पृ. 25

(266) आदेशका कुठाराघात : वही : पृ. 29

(267) अनुशासन का करपुट : वही : पृ. 30

(268) कठोर-स्वर की बिजली : वही : पृ. 30

(269) धैर्य का बांध : वही : पृ. 32

(270) विवेक की बत्तीसी : वही : पृ. 34

(271) अस्वाभाविक गूंज की बैसाखियां : तर्पण : पृ. 53

(272) विषाद की तरंगें : तर्पण : पृ. 57

(273) नीरस नौकरी का चुग्गा : वही : पृ. 58

(274) स्मृतियों का गट्ठर : वही : पृ. 59

(275) संयम की विराट शिला : वही : पृ. 59

(276) विस्मृति का उदार उदधि : वही : पृ. 59

(277) प्रतिभा का चेक : वही : पृ. 60

(278) शिष्टता का छल-बलं : वही : पृ. 60

(279) स्मृति गह्वर : तर्पण : पृ. 63

(280) काल्पनिक प्रणय की सद्यः प्रस्फुटित कली : वही : पृ. 64

(281) सुखी शैशव का उत्तुंग सौंध : वही : पृ. 67

(282) नवीनता की तुरपन : वही : पृ. 70

(283) नवीन प्रेम का ओएसिस : वही : पृ. 71

(284) नवीन प्रेम के ज्वार-भाटे : वही : पृ. 72

(285) हंसी का मूलधन : वही : पृ. 72

(286) रोचक प्रश्नों की चुरन -चटनी : वही : पृ. 73

(287) स्वर के उत्साह की खनक : वही : पृ. 73

(288) चेतना के सोपान : बही : पृ. 79

(289) स्मृतियों के तीखे भाले : वही : पृ. 80

(290) उत्तेजित भीड़ का टिड्डीदल : वही : पृ. 81

(292) मैत्री की डोर : जोकर : पृ. 84

(295) अतीत का सिंहद्वार : जोकर : पृ. 86

(296) लाड़-दुलार का गरिष्ठ ग्रास : वही : पृ. 88

(297) लाड़-दुलार का गरिष्ठ कुपथ्य : वही : पृ. 90

(298) नियति का चक्रव्यूह : वही : पृ. 97

(299) गृहस्थी की गाड़ी : मायापुरी : पृ. 6

(300) मृत्यु का वज्रपात : मायापुरी : पृ. 7

(301) पेट्रोल का बादल : वही : पृ. 9

(302) विवाह का मार्केट : वही : पृ. 31

(303) कल्पना के पर्दे : वही : पृ. 31

(304) ईर्ष्या की लहर : वही : पृ. 36

(305) नियति का अट्टहास : वही : पृ. 40

(306) वैभव का सूर्य : वही : पृ. 53

(307) लज्जा की लालिमा : वही : पृ. 60

(308) विपत्ति के घनघोर बादल : वही : पृ. 60

(309) प्रेम का झंझावात : वही : पृ. 64

§310§ कल्पना का खण्डहर : मायापुरी : पृ. 70
§311§ मदिरा का मोहक नशा : वही : पृ. 70
§312§ संदेह का मेघ : वही : पृ. 80
§313§ अंधकारमय भविष्य का आवरण : वही : पृ. 80
§314§ धूसर जीवन की म्लान गोधूलि : वही : पृ. 89
§315§ वैभव की बाढ़ : वही : पृ. 123
§316§ विश्वासघात का गुरुतर बोझा : वही : पृ. 130
§317§ नूतन प्रणय की बाढ़ : वही : पृ. 152
§318§ विडम्बना का अट्टहास : वही : पृ. 160
§319§ जिरह-बख्तर : कालिन्दी : पृ. 8 /भूमिका/
§320§ प्रश्न-व्यूह : कालिन्दी : पृ. 11 /भूमिका/
§321§ खलाई का अटका गह्वर : कालिन्दी : पृ. पृ. 25
§322§ वर्तमान की बत्तीसी : वही : पृ. 35
§323§ नगण्य विभाग का अंधाकुआं : वही : पृ. 34
§324§ विपत्ति का काला बादल : वही : पृ. 38
§325§ [illegible] वार्धक्य की देहरी : वही : पृ. 77
§326§ लजीली हंसी का अंगराग : वही : पृ. 90
§327§ बाप के बैंक का सौन्दर्य : वही : पृ. 90
§328§ कलुष का मल : वही : पृ. 96
§329§ प्रेस कान्फ्रेन्स का चक्रव्यूह : वही : पृ. 98
§330§ दुर्वह वेदना की गुरु-पोटली : वही : पृ. 110
§331§ चुप्पी का अलीगढ़ी ताला : वही : पृ. 124
§332§ गृहस्थी का जीर्ण खटारा : वही : पृ. 124
§334§ प्रणय निवेदन का अर्घ्य : वही : पृ. 125
§335§ विषाद का घनघुम्मर मेघखण्ड : वही : पृ. 134
§336§ विदेशी सुगंध की तीव्र पिचकारी : वही : पृ. 136
§337§ यादों का बोझा : वही : पृ. 141
§338§ धनागम की खुशबू : वही : पृ. 146

§339§ स्कैण्डल की पोटलियां : कालिन्दी : पृ. 154
§340§ विवाह-वैतरणी : वही : पृ. 157
§341§ बचपन की देहरी : वही : पृ. 173
§342§ संदेह के नागपाश : वही : पृ. 178
§343§ चिन्ता की सर्पिल रेखाएं : वही : पृ. 179
§344§ ओछेपन की अभिज्ञता : वही : पृ. 180
§345§ विदेशी मेम का तोहफा : वही : पृ. 183
§346§ गृहस्थी का भग्न खण्डहर : वही : पृ. 210
§347§ क्रोध की उत्तुंग तरंगें : वही : पृ. 216

5.03 : नये विशेषण :

संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता को द्योतित करने वाला शब्द विशेषण कहलाता है । कालिदास उपमाओं के कवि थे । बाणभट्ट विशेषणों के कवि माने जा सकते हैं । अपनी लम्बी यात्रा के अनेक पड़ावों में कविता कई बार विशेषणों की कला प्रतीत होता है । गद्य में भी कविता का आनंद और अनुभव कई बार सुंदर विशेषणों के प्रयोगों से सिद्ध हो जाता है । कालरिज ने कविता की परिभाषा देते हुए कहा— "पोएट्री इज द बेस्ट वर्ड्स इन धेयर बेस्ट आर्डर " [9] अर्थात् सर्वोत्तम शब्दों का सर्वोत्तम क्रम में प्रयोग कविता है । यहां सर्वोत्तम शब्दों से अभिप्राय भावानुरूप शब्दों से है । शब्दों के इस चयन में प्रायः नये विशेषणों का चुनाव एक महत्वपूर्ण वस्तु होती है । "सुंदर आंख" या आकर्षक आंख " ये शब्द इतने प्रभावित नहीं करते , जितने निम्नलिखित विशेषण — "आल्कोहोलिक आँखें " , "मदिर आँखें " , "चुंबकीय आँखें " । डा. देसाई के एक दोहे में इस प्रकार की आंखों की बात कुछ विशेषणों के माध्यम से कही गई है —

" भजूं तुम्हारे रूप को , पा लूंगा यों मोख ।
बसूं खैलन्दी आंख में , मदिर शिकारी शोख ।। " [10]

यहां पर "खैलन्दी आँखें " , मदिर आँखें" , "शिकारी आँखें " और

"शोख आँखें " आदि विशेषण काव्य-रसिकों का ध्यान आकर्षित करते हैं । वस्तुतः काव्य या साहित्य या कला मात्र , कल्पना पर आधृत है और विशेषणों का निर्माण भी इसी रूप-विधायिनी कल्पना के द्वारा होता है । अंग्रेजी का एक अलंकार — विशेषण विपर्यय (Transferred Epithet) — तो इन्हीं विशेषणों की कला पर आधारित है । निम्नलिखित काव्य-उदाहरणों में इस विशेषण-विपर्यय अलंकार की छटा को देखा जा सकता है --

/1/ "निर्दय उंगली अरी ठहर जा
पल भर अनुकंपा से भर जा
यह मूर्छित मूर्च्छना आह-सी
निकलेगी निस्सार । " (प्रसाद)

/2/ किसी विनोद की तृषित गोद में
आज पोंछती वे दृग नीर । " (निराला)

इन उदाहरणों पर ध्यान देने से स्पष्ट होगा कि "निर्दय उंगली " , "मूर्छित मूर्च्छना" तथा "तृषित गोद" आदि में कथन को अधिक प्रभावशाली या सारगर्भित या काव्यात्मक बनाने के लिए उसके विशेषण का विपर्यय कर दिया गया है । स्वयं उंगली कैसे निर्दय हो सकती है , व्यक्ति निर्दय हो सकता है ; उसी प्रकार स्वयं "गोद" कैसे तृषित हो सकती है , वह किसी तृषित व्यक्ति की हो सकती है । ऐसे ही स्वयं "मूर्च्छना" कैसे मूर्छित हो सकती है ? परंतु ये सब काव्य-रसिक के हृदय या मन में स्थित काव्य-कोश को अचानक चमत्कृत कर देने के उद्देश्य प्रयोजित होता है ।[11] ऐसे में जो विशेषण प्रयुक्त होते हैं वे साधारणतया ऐसे होते हैं , जो पाठक की कल्पना में कम ही आ सकते हैं । "उंगली" के लिए विशेषण "सीधी" , "टेढ़ी" , "टूटी" , "उठी हुई " आदि तो हो सकते हैं , परंतु "उंगली" निर्दय भी हो सकती है , यह बात तो किसी कवि की कल्पना में आ सकती है ; अन्यत्र नहीं । "बुभुक्षित प्राणों का कुत्सित आह्वान" , "प्रणयी अधरों का आश्वासन "[12] तथा " शैशव की निर्दोष अकपट प्रेम की

स्निग्धता • [13] जैसे प्रयोग शिवानीजी की भाषा की काव्यात्मकता को द्योतित करते हैं ।

यहां पर शिवानीजी के कुछ उपन्यासों से ऐसे विशेषणों को प्रस्तुत किया गया है, जो सर्वसामान्य या साधारण से कुछ अलग प्रकार के हैं । प्रत्येक पृष्ठ और पंक्ति में ऐसे वैशेषिक शब्द उपलब्ध होते हैं, अतः यहां उनमें से थोड़े-से ही शब्दों को रखने का उपक्रम रहा है ।

क्रुद्ध आषाढ़ , कलात्मक अंगुलियां , नर्म कर्टसी , वर्षा-मुखरिता रात , सिहरती शर्वरी , मृतवत्सा पन्ना , मखमली होंठ , बंकिम खींचाव , संदिग्धतापूर्ण कालिमा , साडीमण्डिता भव्यमूर्ति , बंकिम कटाक्ष , उमड़ता प्रेमोदधि , यथेष्ट कुख्याति , क्षुधातुर दृष्टि , अनुसंधानी दृष्टि , क्षणिक- अतिथि , व्यग्र दृष्टि , यूनानी उबटन, भुवनमोहिनी हंसी , राजनीतिक प्रगल्भता , नम्र प्रणयी , आतुर आह्वान , अदृश्य अर्गला , दक्ष कलाइयां , काल्पनिक चटखारे , रेशमी पलकें , हड्डी तोड़ झटका , भीमकाय भैंसें , स्वाभाविक लुनाई , हिस्टीरिकल चीख , काल्पनिक डुबकियां , कर्णचुम्बी आंखें , सुराहीदार ग्रीवा ,मारात्मक साड़ी , गगनचारिणी एयरहोस्टेस , प्राणान्तक घूंसा , अवांछित कौमार्य , लोपामुद्रा का-सा जूड़ा , थकक-थैया पैर , कुंभकर्णी नींद , मुखरा सड़क , मारात्मक सुगंध , निद्रांध सुंदरी , गोष्ठीप्रिया अभिसारिका , रोमाण्टिक गोताखोरी, कौमार्य-कवचधारिणी ,मुखरा साली , मूक कटाक्ष , विवेकहीन जिह्वा, मारात्मक भूल , क्यूपिड अधर , आसन्नप्राय मृत्यु , मर्दानी औरत , निशाचर अतिथि ; [14] स्पोर्ट्स ब्लाउज से झांकता यौवन , नीले समुद्र-सी उदार आंखें , प्रभुत्वपूर्ण डग , कामचलाऊ अलग्योझा , दुधिया बचपन-सी मिठास , आग्नेय दृष्टि , द्रुतगामी स्पीड , बिगड़ैल छोकरी , दुर्दान्त बालिका , आहत गिली दृष्टि , सात्विकी चेहरा, विलासी अधर , कुटिल कटाक्ष , रसीली आंखें , सौतिया डाह , ×सुरमई× सुरमई सांझ , इजिप्शियन सुंदरी , शैतानी मुस्कराहट , निद्रित चेहरा , अमानुषी चुप्पी , एलोकेशी जूड़ा , अभेद चुप्पी ,

फालसाई साड़ी , कर्णचुम्बी मुस्कान , अलसगमना अहल्या , सूई-सी तीखी नज़र , लाजभीनी हंसी , कन्योचित शिष्टाचार , उन्मुक्त सरल हास्य-लहरी , वैदूर्यमणि-सी नीली आँखें , बाष्पस्तंभित कंठ , कल्पित दुस्साहस , सुचिक्कन केश , काली भुजंग-सी जंघा , अविचलित गांभीर्य , मृत सुगंध , निराभरण तापसी जननी , श्रृंगारिका अहल्या , मैनीक्युरर्ड नाखून , बन्द गोभी-सा गोल चेहरा , पुण्यारण्य ×××× विहारिणी वैष्णवी , भीनी-सी खिड़की , मुद्गर-सी टांगें , निष्पाप ठिठोलियां , तनूदरी सुंदरियां , मोटा गुस्सा , कर्णचुम्बी रसीली आँखें , ब्रिफकेशनुमा बटुआ , कन्डीलनुमा टोकरियां , एनीमिक-सी लड़की , मुलतानी रंग , निर्मल हास्यधारा , ट्रापिकल जलवायु , राजसी बचपन , स्नेहपगा स्वर , डिप्लोमेट नथुने , पांडित्यपूर्ण व्यक्तित्व , हिस्टिरिकल सपने , तन्वी किशोरी , संदली धुआं , छलनामय संरक्षण , पहाड़-सी छातियां ; [15] सिड़बिल्ली , स्निग्ध हंसी , रहस्यमय जोड़ी , राजसी बरसातो , अल्पभाषिणी पुत्री , बारूदी धूमलेखा , निस्संग तंद्रिलता , धूमिल म्लान मुखाकृति , प्रगल्भ अतिथि , आहत दृष्टि , चुप्पी की चकराई हवा , तिमिर का धूमिल आवरण , अनकहे उपालंभ , कार्तिकेय-सा वर , बाष्प-गद्गद स्वर , अधीर चपला मृत्यु , अनुभवी जिह्वा , अनिवार्य अभिज्ञता , श्मशानिया उदासी , वात्सल्य विगलित दृष्टि , रिकेटी सींक-सा छोकरा , बसाती रजाई , हृदयहीन उदासीनता , आहत आँखें , मदिर सुगंध , कौमार्योज्ज्वल हंसी , पलिताभ कपोल , अयत्नज मोहकता , कठोर कटाक्ष ,पीताभ दमक , लजीली चितवन , संकोची फोटोग्राफी , प्राणान्तक यंत्रणा , शांत-संयत तेजस्विता , सांघातिक चुनौती , डागर आँखें , नग्न भुजवल्लरियां , आत्महारा संगीत, निद्रामग्ना किशोरी , धूर्त श्रृगाली पुतलियां , श्मश्रुमुखी प्रौढ़ा , गिरगिटी रंग , उद्विग्ना कमलेश्वरी , आध्यात्मिक राजधानी वाराणसी , पुण्यतोया भागीरथी , सुचिक्कन कपोल , कन्या-दाय-ग्रस्त पिता , अदृश्य आघात , काल्पनिक दर्द , पीताभ कपोल , वरदायी मंदिर , श्याम हरित द्युति , रेशमी पक्ष्म , भीमकाय

महिला , भुवनमोहिनी भ्रूभंगिमा , सद्यःस्नात केशराशि , पीड़ित पशु की-सी दृष्टि , पारलौकिक बाजीगरी , बचकाना चेहरा , दूधिया मिठास , तिर्यक दृष्टि , पितृहन्ता बहन , मर्दाना रामनामी कुर्ता , धूम्रपान का अनुभवी अंदाज , जनाना चेहरा , कत्थई बत्तीसी , बचकानी योजना , निशाचरी मुखौटा , असिलोमा दैत्य, अनचिन्ही महानगरी , अनक्लेम्ड मृतदेह , आमंत्रित अधीनता , मधुमय पराधीनता , जादुई बौना , अकड़बाज छोकरी , यूनानी नाक , मृत्युंजयी टॉनिक , अपदार्थ छोकरा ;[16] नाटकीय विलाप , आग्नेय गिरि , निभृत एकान्त , भुवनमोहिनी तिर्यक दृष्टि , सर्पिल मोड़ , परकटी तितली-सी निष्प्राण , यत्नांकित गहरी लालिमा , अनिद्र करवटें , तीव्रस्रोता नदियां , बंकिम ग्रीवा , गुदबदा शिशु , ज्योत्स्नाप्लावित रात्रि , क्षणस्थायी सौभाग्य , त्रुटिहीन आतिथ्य , दीर्घदेही बस , कृपण धारा , अदर्शी नियति , यौनताहीन आलिंगन , शतमुखी विनिपात , मृत्युंजयी जड़ी बूटियां , उग्रतेजी शराब ;[17] कल्पुरुष मैत्री दीर्घांगी गौरवर्णी युवती , कठोर साहचर्य , सात्त्विकी जिह्वा , हड्डीतोड़ मेहनत , मौनव्रतधारी बुजुर्ग , सूईपटक सन्नाटा , कर्कशा पुत्रवंचिता सास , बूमरेंगी तेजी , खोखले विवाह , सुखदुखानुगामिनी सहचरी , कलुषित अतीत , वार्धक्य जर्जरित हृदय , कामार्त्त भीड़ , बार्बेक्यू पार्टियां , सुनहली रातें , रूपहले दिन , चिकना घड़ा , सिरचढ़ी इकलौती बेटी , ओछन-पोछन बिटिया , अपदार्थ पुत्र ;[18] सद्योद्दृष्ट दुःस्वप्न , आकस्मिक परिचय , घातक विष , बहुचर्चित सौन्दर्य , धृष्ट प्रस्ताव , सर्पिल पगदण्डी , दाड़िमदशना दिव्य छटा , दिव्य स्मित , प्रोषित पत्नियां , आयातित उज्ज्वल आँखें , कृशोदरी पदचाप , आपादमस्तक परिवर्तित रूप , रतनारी एड़ियां , सुरभित खाद्य पदार्थ , कोजी कमरा , कलात्मक स्ट्रोक , धृष्ट एब्नार्मल किशोरी , विक्षिप्त सुंदरी , अस्वाभाविक दीप्ति , उर्ध्वमुखी धूम्ररेखा , अल्हड़ गर्वीली सुललिता , विषैली लार , वासनामय प्रेम , जीवन-उपन्यास की धारावाहिक रोचक किस्त , कुटिलकामी डिसूजा , सुसंस्कृत चमकते चांद-सा परिवार , किशोरी के-से कमनीय कपोल ,

मुग्ध दृष्टि , क्लान्त आँखें , उत्क्रान्तिदा शक्ति , कैपसूल प्रदत्त निद्रा , निद्रामग्ना उर्वशी , संस्कारी सात्त्विकी ग्रास , वन्य लकड़बग्घे-सी आँखें , भारी कंठ का अनुपम आकर्षण , तृषाक्रान्त प्रेत, जननी के xxxxx जन्मजात इन्ट्यूशन , निर्दोष बचकाने चेहरे की दुधिया झलक , बंधनहीन xx अविवेकी चित्त , मरणोन्मुखी उड़ान , लड़कियों की-सी रेशमी पलकें , संदली खुशबू , सौभाग्य ग्रास , कुटिल छलनामयी योजना , शर्बती आँखें , क्षुधातुर अधर , अटपटी अंतरंग बातों की प्रश्नशलाका , रक्तिम अधर , सात्त्विकी तेज , वेदनाक्रान्त चेहरा , संदिग्ध दृष्टि , व्यंग्यात्मक स्मित , आग्नेय दृष्टि , xxxxxxxxx प्राणाधिका सुंदरी पत्नी , कुत्सित वामांग , xxxxx सान्ध्यकालीन सुभग सौन्दर्य , सूर्य की प्रौढ़ लालिमा ;[19] प्राक्तन छात्रा , वर्षास्नात रात्रि , अल्लम-गल्लम ब्लाउज , बाँहहीन ह्रस्व परिधान , खूंखार इंस्पेक्शन , उर्वर मस्तिष्क , मेहराबदार दरवाजे , गुंबदनुमा छतरी , अण्डाकार छत , निभृत प्रासाद , मकबरे-सी कोठी, उज्ज्वल सुंदर हंसी , मदिर झोंका , दौलमदार व्यक्तित्व , सुदीर्घ कौमार्य , बुद्धिप्रदीप्त प्रशस्त ललाट , xxxxxx चम्पकवर्णी अंगुली , कुंठिता मास्टरानियाँ , कलातृषित चित्त की तृषा , वयःजर्जर हाथ, कल्चरल टूर , मुंहलगी अतिथि , शाही आतिथ्य , मौन विद्रोह , चटुल विभा-तरंग सी चपल झलक , श्रृंगारमग्ना अभिसारिका , फूला गोमटा मुख , स्वामीभक्त कर्तव्यपरायण अंगरक्षक , अस्वाभाविक चुप्पी, हीम-शीतल निस्तब्धता , अपराधी पीठ , निद्राविहीन विभावरी, काल्पनिक दर्पण , दुर्वह बोझ , विभिषणी बतकही , अभिशप्त पखवाड़ा, उग्र कठोर गांभीर्य , रुग्ण मैत्री , निर्लज्ज xxxxxxx लपलपाहट , तिर्यक हंसी , आहत अश्रुसिक्त दृष्टि , पराजित श्रीहीन छटा , सील्ड निष्प्राण देह , वार्धक्यजर्जर हृदय , आग्नेय दृष्टि , हिस्टोरिकल माणिक , माणिकहीन अंगूठी ;[20] चीनी गुड़िया-से छोटे चेहरे , लोलुप अजदहे , मृणाल"-दण्ड से बाहू , होजनुमा मोजे , कलामर्मज्ञ की अनुभवी दृष्टि , गदराई झाड़ी , मिश्री-घुले कंठ-स्वर , परिहास-

शून्य रिक्तता , अश्रुसिक्त पलकें , आनंदमयी सदाचारी आत्मा , मर्दानी रूमाल , आंखों की संदेहास्पद लालिमा , हार्दिक अभिवादन के अदृश्य गुलदस्ते , कत-कटी कलम , मोतिया अक्षर , मर्मान्तक यंत्रणा , कुशल छात्रों की बहुरंगी भीड़ , सरल ग्राम्याएं , चम्पक उंगलियों का स्पर्श , भीमोदरा पिल्ली , कुण्ठित अविवाहित जीवन , रसीले ओष्ठ , सुदीर्घ पूजा , कर्कशा बुढ़िया , गालियों का मौलिक कोश , रत्नगर्भा जननी , क्षत-विक्षत चित्त , वज्रादपि कठोर , कुसुमादपि मृदु , मौन प्रणय निवेदन , लड़कियों-सी लजीली चितवन , कर्पचुम्बी लालिमा , अंतरिक्षचरा डाकिनी , सुचिक्कन कपोल , अस्वाभाविक गांभीर्य, रतनारी एड़ियां , क्लान्त पदचाप , स्निग्धायत नेत्र उद्धत दुश्चरित्र नीचाशय दैत्य , अभिजात उदारचेत्ता मार्जित रुचि के पुरुष , पगदण्डी सहचरी , शुष्क फरमाइश , प्रणयोन्मत्त आंखें , कस्तूरी पुट्टिका , धृष्टा जिह्वा , निर्लज्ज स्तुति , छीजे दांत , अनारदानी हंसी , तीखा उतार , मुखर एकान्त , कुमाऊं कन्यारत्न , कलात्मक टहनियां, स्निग्ध हंसी , गंधमादन पर्वत-सी देह , बीभत्स हंसी , विदेशी कर्टसी , क्षुधातुर दृष्टि , कुत्सित हंसी , रहस्यमयी चुप्पी , अपार्थिव तेज , बलवीर्य मदोद्धत असुर ;[21] उग्रतेजी कंठ , गरिष्ठ संगीत परिवेशना , बेतुकी फरमाइशें , सतर उठान , प्रौढ़ा हरिदासी , बिगड़ैल पुत्री , खजूरी गुड , अनकट डायमण्ड , देवदत्त प्रतिभा , अनाम प्रेमपत्रों की अस्वाभाविक दृष्टि , सुचिक्कन घनी मूंछें , नक-चढ़ी ससुराल , काली भुजंग संतान , जमींदारी प्रासाद , कलुषित खत , शांत निरुद्वेग दृष्टि , आबनूसी चेहरा ।[22]

5.04 : विशेषण पदबंध :

कभी-कभी किसी एक शब्द के लिए विशेषणों की एक माला-सी प्रयुक्त होती है , उसे विशेषण पदबंध कहा जाता है ।[23] बाणभट्ट की कादम्बरी में ऐसे विशेषण पदबंधों का आधिक्य मिलता है । जैसे उपमा अलंकार में एक अलंकार होता है — मालोपमा ।[24] ठीक उसी

तरह विशेषण पदबंध में विशेषणों की एक हारमाला-सी उपस्थित हो जाती है । जैसे कोई पुष्पमाला किसीके गले में डाली जाती है , मानो वैसे ही यहां किसी मानवन्त शब्द को विशेषणों की माला पहनायी जाती है , जैसे — " बड़ी स्निग्ध कोमल मोहक चुंबकीय अनारदानी फेनुगिलास हंसी । " यहां पर "हंसी" शब्द के लिए सात विशेषणों का प्रयोग हुआ है । ऐसे कई विशेषण पदबंध शिवानीजी के उपन्यासों में प्राप्त होते हैं । यहां कुछ थोड़े-से ही विशेषण पदबंध उनके कुछेक उपन्यासों से रखने का प्रयास किया है ।

(1) सुचित्र जघना कृशोदरी की पदचाप
(2) सिंहासन-सी मखमली गद्दीदार ऊंची-ऊंची कुर्सियां
(3) निःसीम शून्य नक्षत्र-खचित गगन
(4) अटपटी अंतरंग बातों की प्रश्नशलाका
(5) अनजान गृहस्थी की असंख्य देहरियां [25]
(6) सुदीर्घ कौमार्य की अस्वाभाविक झुर्रियां
(7) बुद्धिप्रदीप्त झकझक करता प्रशस्त ललाट
(8) शुष्क कलहप्रिया कुंठिता मास्टरानियां
(9) उग्रकठोर गांभीर्य का क्षणिक परिचय
(10) नारी-सौन्दर्य-लोलुप जिह्वा की निर्लज्ज लपलपाहट [26]
(11) लाल पड़ गई आंखों की संदेहास्पद लालिमा
(12) हार्दिक अभिवादन के अदृश्य गुलदस्ते
(13) कटार-सी तीखी सफेद टोपी की झलक [27]
(14) अनाम प्रेमपत्रों की अस्वाभाविक दृष्टि
(15) जगमगाते हीरों के आभिजात्य की वंदना [28]
(16) काले-काले लौहवर्णी संथाली चेहरे
(17) लुंगीधारिणी उत्तरीयविहीन मधुछंदा
(18) लम्बा गठीला कुंदनवर्णी अपरिचित युवक
(19) सड़क पर घूमनेवाली कंजरियों-सी रंगउड़ी गुड़ीमुड़ी-सी फटी साड़ी
(20) असहाय वात्सल्य विगलित दृष्टि

§21§ नवीन अनुराग रंजित लाल कपोल

§22§ सीखे-पढ़े किसी विदेशी बैरे-सी पटुता

§23§ निशीथश्यामल स्निग्ध संथाल किशोरी

§24§ दुःसाहसी दर्पित वीर [29]

§25§ कृष्णपक्ष के धूमिल चन्द्रमा-सी सीमित मिंची कृपण मुस्कान

§26§ यत्नांकित गहरी लालिमा

§27§ तीव्र स्रोता असीम शक्तिशालिनी नदियां

§28§ यायावर खूंखार तिब्बती लामाओं के भयावह अप्सू कुत्ते [30]

§29§ मैत्री के प्रगाढ़पन के दुहे शीतोष्ण जलरहित दूध का असली घूंट

§30§ पतिहंता सज़ायाफ़्ता कलंकिनी स्त्री

§31§ शांत परमहंसी दिव्य चेहरा

§32§ विलक्षण विवेकसंपन्न सहिष्णु जननी

§33§ लाड़ली ओछन-पोछन बिटिया [31]

§34§ भयानक काल-कोठरी की अमानवीय निस्तब्धता

§35§ अद्भुत बाल-सुलभ स्निग्ध हंसी से रंगी भस्मीभूत आंखें

§36§ नंगे अवधूत की सच्ची सहचरी महामाया महाविद्या धूनीधूम्र से
अवरुद्ध अवसन्न मुस्कान

§37§ संकरी सुराग-सी वैराग्य गुहा

§38§ अनजाने सुदीर्घ पथ की परिक्रमा

§39§ सुखकी पैगों में झूलती भाग्यवती भतीजी

§40§ प्रकृति के क्रूर आतप वर्षाकालीन घात-प्रतिघात को सहता
इमारत-वृन्द

§41§ प्रेमदुर्ग की एक-एक गुप्त सुरंग

§42§ चतुर वाचाल किशोर की डिप्लोमेसी

§43§ विधाताप्रदत्त सुडौल अंग-विन्यास

§44§ माइकल एंजलो की-सी आत्महारा लगन

§45§ फेनोज्ज्वल उज्ज्वल हंसी

§46§ ऊंचे तबके की होठरंगी गतयौवना (32)

§47§ गोल-गोलाकार सर्पिणी-सी पगडण्डियां

§48§ अत्यंत लावण्यमयी श्यामांगी तन्वी सुंदरी

§49§ कार्यरत सलोना मुखमंडल

§50§ भीगे सुगन्धित केशपाश की मन्द परिमल सुगंध

§51§ आंखों की कल्पनातीत हृदयभेदी दृढ़ता

§52§ सरल स्कंधस्पर्श करती शीतल बयार

§53§ लज्जावनत सुंदर अस्पष्ट मुखमंडल [33]

§54§ नग्न बतासे-सी दुग्ध धवल पीठ

§55§ सजी-संवरी सौम्या सहचरी शिला

§56§ सुरुचिसंपन्न ऊंची पसंद का समधियाना

§57§ नगद उज्जड़ पहाड़ी परिवेश

§58§ उत्तेजना-मिश्रित क्रोध से कांपता नुकीला चिबुक

§59§ पूर्व प्रभु का एक आज्ञाकारी निष्ठावान अनुचर

§60§ गांधर्व किन्नर का-सा मीठा कंठ

§61§ मर्कटमुखी अछूत आस्ट्रेलियन छुकड़ी की प्रियतमा परू

§62§ नारी-साहचर्य लोलुप भ्रमर-चित्त

§63§ चिकट से तकिये पर लटकी बेजान-सी गरदन

§64§ वर्षा के गहन अंधकार में डूबा हृदय

§65§ क्लान्त कोटरग्रस्त आंखों की कालिमा

§66§ बलखाती पेन्सिल स्केच-सी क्षीण कलेवरी नदियां

§67§ गिरजे के इतवारी घण्टे की गूंज

§68§ चतुर्दशी की ज्योत-चन्द्रिका स्नात-सा पीला चेहरा

§69§ मनकी चतुर्दिक व्यापक शून्यता [34]

§70§ गोरी -उजली गांधर्व-कन्याओं सी उसकी पुत्रियां

§71§ हृदयाकार चेहरे की निर्दोष छवि

§72§ पतली सर्पिल पगदंडी

§73§ नशे में मत्त मदालस युवकों का उन्मत्त आचरण

§74§ देवद्रुमों की हिमशीतल बयार का स्निग्ध स्पर्श

§75§ झिंगुर की लयबद्ध झंकार

§76§ दिव्य प्राचीन भग्न मंदिर

§77§ दीर्घांगी देह का पीताभ वर्ण

§78§ प्रथम यौवन की चिंताहीन उन्मुक्त निर्दोष हंसी

§79§ वेदनाक्रांत अपराधी मन

§80§ उत्फुल्ल कमनीय चेहरे की स्निग्ध हंसी

§81§ आपादमस्तक परिवर्तित भुवनमोहिनी छवि

§82§ पारदर्शी अग्निवर्णी लाल कोटा साड़ी

§83§ असमय ही अस्तगामी सूर्य की-सी म्लान आभा

§84§ विपरीत अनाकर्षक सज्जा

§85§ बड़ी-बड़ी भरी निष्कपट आँखें

§86§ सचकित विस्फारित मृगी-सी दृष्टि

§87§ मत्तगयंद छंद-सा मनोहारी पद-विन्यास

§88§ लाल पहाड़ी आड़ से दमकते रक्तिम कपोल

§89§ सुचिक्कन काली घन-घटा सी खुली केशराशि

§90§ रोमहीन पहाड़ी "फूली" -सी चिकनी टाँगें [35]

§91§ मेदबहुल शरीर की स्वामिनी गुरु नितंबिनी मामी

§92§ वैधव्य दग्ध चित्त

§93§ अभ्यस्त सूटकेस दस्यु

§94§ सौम्य स्निग्ध विस्मृत चेहरा

§95§ गोरी उजली सुदर्शना सुनयनी कश्मिरन

§96§ बुद्धिमति आधुनिका जननी

§97§ भोला निष्कपट चित्त [36]

§98§ सतरंगी आभा बिखेरती धूप की वृहद् रंगीन छतरी हवा

§99§ असंतुष्ट सिरचढ़ा नींद में डूबा स्वर

§100§ पिता की-सी आकर्षक उज्ज्वल हंसी

§101§ अनिश्चित अस्थिर डगमगाती पदचाप

§102§ उद्धत नशे में उन्मत्त पति की उग्रमूर्ति

§103§ ईषत् नम्र सुचिक्कन स्तन-युगल

§104§ स्वर का एंग्लोइंडियन अहं

§105§ कंटकाकीर्ण छड़ी की छुअन

§106§ क्रन्दन-स्फुरित रक्तिमवर्णी आयत आँखें [37]

§107§ बौने कदर्य गंजे पति

§108§ वयस्क सौन्दर्य पारखी निर्णायकों की लोलुप आँखें

§109§ गिरगिटी कलेवर की बहुरूपिया प्रवंचना

§110§ संदेह-मिश्रित घृणा की लौ

§111§ निर्वात उज्ज्वल आकाश -सा ही उज्ज्वल चेहरा [38]

§112§ प्रौढ़ा मां का अस्वाभाविक गांभीर्य

§113§ तृषार्त करुण आंखों की स्मृति

§114§ मस्तानी निगरगंड देह का तारुण्य

§115§ सैमू पौधों की स्कंध-स्पर्शी सुवासित बयार

§116§ जंगली खरगोश की-सी टांगोंवाली नंदी [39]

§117§ सुखी गृहस्थी के जीवित विज्ञापन-सी कोई लक्ष्मी-स्वरूपा गृहिणी

§118§ रावण-सी देह और महिषासुर-से चेहरे वाला भयानक हब्शी भृत्य

§119§ नीली आँखें और सुभग व्यक्तित्व वाला विदेशी प्रेमी

§120§ शुतुरमुर्ग के अण्डों-से मोती की माला

§121§ नवरत्ती बावन तोले की वनमृगी-सी आँखें

§122§ कांप रही सहमी बड़ी-बड़ी आंखों वाली सांवली सहमी किशोरी

§123§ भरे-भरे अंगों की छटा बिखेरती लावण्यमयी वाणी सेन

§124§ शतदल कमल की पंखुड़ियों-सी चम्पक अंगुलियां

§125§ सींग घुसेड़ने को तत्पर क्रोधी सांड से अफसर

§126§ सीधी-सादी डरपोक सुंदरी पहाड़ी बहू

§127§ पर्शियन बिल्ली के-से मखमली कदम

§128§ बैले डांसर की-सी पतली टांग

§129§ पुराने बरगद की तनी-सी पुष्ट टांग

(130) पतितपावनी सर्वतीर्थमयी भागीरथी

(131) किसी अरण्य जनशून्य वन में धूप सेंकते नरव्याघ्र की-सी किसीको कुछ न समझने वाली तेजस्वी आँखें

(132) पर्शियन बिल्ली की पूंछ-सी बड़ी लम्बी मूंछें

(133) संयत जीवन के जीवन्त विज्ञापन-सा चमकता तेजस्वी माथा

(134) लिफ्ट देने का भद्र पुरुषोचित प्रस्ताव

(135) अभागी पुत्रियों से लदे कल्पतरू की पत्तियां

(136) वाचाल , मुखर बातों के इन्द्रजाल में अतिथियों को बांध लेने वाले चिकने चुपड़े चेहरे और चमकते सिर वाले हसमुख पांडेजी

(137) बड़ी-बड़ी आंखों वाली बंगकन्या-सा सलोनी आँखें

(138) जंगली दामोदर का कांटा चुभाता स्पर्श

(139) एपोलो-सा सुंदर आंखोंवाला पोल

(140) क्षण-क्षण में नये रूप धरनेवाली अष्टभुजा की-सी तेजोमयी सुंदरी

(141) लंबी-नाटी गोरी-सांवरी अत्यन्त लाड़भरी देशी-विदेशी मौसियां

(142) दुरूह गोरखधंधे-सा व्यक्तित्व

(143) सिद्धहस्त नट-सी मशीनी गुलाटें

(144) किसी सर्कस-सुंदरी नटीनी-सी लचीली छलांग

(145) प्रातःस्मरणीय लोटाधारी ग्रामीण

(146) छोटी-मोटी मस्त हस्तिनी-सी आंटी

(147) आसन्नप्रसवा ~~xxxxxxxx~~ प्रौढ़ा सुंदरी

(148) कोकटेल की एक-एक अमृत-स्वरूप घूंट

(149) अनुपम लम्बी-चौड़ी सुगठित देह

(150) अस्वाभाविक रूप से तनी रूठी प्रेयसी [40]

(151) स्पोर्ट्स ब्लाउज से झांकता यौवन

(152) नीले समुद्र-सी उदार आँखें

(153) बरफ की शिला-सी ठण्डी पत्नी

(154) दुधिया बचपन की मिठास

(155) नितान्त अपरिचिता प्रतिवेशिनी

§156§ रंगी-पुती छिछोरी आकृतियाँ

§157§ काजल आँजे कर्णचुम्बी नयन

§158§ सुंदरी और अटूट संपत्ति की उत्तराधिकारिणी गुणी कन्या

§159§ रक्तवर्ण रक्ताम्बरा सुंदरी

§160§ चोट खायी सर्पिणी-सी मल्लिका

§161§ बहुत सारी लंबी कानी दुबली मोटी नाटी भैंडी सुंदर और
कदर्य औरतों का जत्था

§162§ ऊँचे स्वर की पहाड़ी फुसफुसाहट

§163§ घूमती-बलखाती नटीनी-सी कोसी नदी

§164§ पर्वतीय समाज का विकट चक्रव्यूह

§165§ कृत्रिम परिधानों की नींव पर टीका हुआ यौवन

§166§ गंधमादन पर्वत-सी विराट देह

§167§ बड़ी-बड़ी बताशे-सी हल्की चपातियाँ

§168§ कुंआरी रातों के कई मीठे सपने

§169§ षोड़शी का-सा बंकिम कटाक्ष

§170§ भूखी दृष्टि के वासना के अंगारे

§171§ क्रूर नरव्याघ्र -सा दिखनेवाला व्यक्ति [41]

§172§ अनेक जगमगाते रंगबिरंगे रत्नाभरणों से सुशोभित प्रणयी की गोद
में कामिनी-सा मदमस्त मद्रास

§173§ गंभीर दार्शनिक की-सी आँखें

§174§ तिमिराच्छन्नी गूढ़ मंडप

§175§ नंगी तलवार-सा चमकाते पूजारी

§176§ फेनोज्ज्वल उद्दत तरंगें

§177§ परम तृप्ति की विजयी मुस्कान

§178§ साहित्य के सुरम्य नंदन कानन

§179§ स्नेहपूर्ण आह्वान की अवहेलना

§180§ बुद्धिदीप्त प्रशस्त ललाट

§181§ यमदूत-सी ₹ भयावह काली स्मृतियाँ [42]

(182) गर्वोन्नत अहंकारी ग्रीवाएं

(183) सुरीली दानेदार तानमाला

(184) गहन तिमिराच्छन्न गुहद्वार

(185) बेजान बीमार वज्रमूर्खा सुंदरी तुम्हारी मां[43]

(186) अभिशप्त अतीत की दुर्वह स्मृतियां

ऊपर जिन विशेषण पदबंधों को दिया गया है , उनमें कई ऐसे हैं जो शिवानीजी की भाषा में काव्यात्मकता एवं कलात्मकता का निर्माण करते हैं । परन्तु कई बार इनका अतिरेक अस्वाभाविक-सा प्रतीत होता है । प्रयोग सार्थक हों तो भाषा-शैली में और भी निखार आ जाता है , परंतु जहां प्रयोग के खातिर प्रयोग की प्रवृत्ति दृष्टिगत होती हों , वहां उसकी असहजता एवं यत्नजता किंचित खटकने लगती है । कहीं-कहीं इनमें पुनरावृत्ति और दोहराव भी मिलता है । दूसरे जहां स्त्रियों के सौन्दर्य -निरूपण में ऐसे विशेषणों का प्रयोग हुआ है , वहां प्रायः लेखिका का दृष्टिकोण रीतिकालीन या छायावादी रहा है ।

5.05 : कहावत और मुहावरों के नये प्रयोग :

आगामी षष्ठ अध्याय में जहां शिवानीजी की भाषा-शैली की कतिपय विशेषताओं को उकेरा जाना है , वहां कहावतों और मुहावरों पर विस्तार से विचार होगा । यहां तो उन्होंने इनके माध्यम से जो नव्य अभिव्यंजना की चेष्टा की है , उसकी बात है । दूसरे "शब्द-विचार" के अन्तर्गत कहावत पर विचार करना यों भी उचित नहीं होगा , क्योंकि कहावत शब्द या शब्द-समूह न होकर पूर्ण वाक्य की परिसीमा में आते हैं । किन्तु जहां किसी कहावत के माध्यम से नूतन भाषाभिव्यंजना का यत्न होगा , वहां किसी शब्द-विशेष के कारण ही वह हुआ है । अतः उस रूप में यहां उसकी चर्चा हुई है । उदाहरण के तौर पर जैसे एक कहावत है — "गंगा गये गंगादास जमना गये जमनादास " , अब इसके आधार पर कोई यह

कि हमारी राजनीति में अब "गंगादासों" और "जमनादासों" की भरमार हो गई है, तो इस कथन में कहावत को एक नये ढंग से प्रयुक्त करने की प्रवृत्ति को लक्षित किया जा सकता है। उसी प्रकार कहीं-कहीं नये मुहावरे प्रयुक्त हुए हैं, या कहीं-कहीं पुराने रूढ़ मुहावरों को नये ढंग से प्रयुक्त किया गया है।

बुराई का परिणाम अंततः बुराई में ही आता है। इस बात को अभिव्यक्त करने के लिए "कृष्णकली" उपन्यास में एक कहावत आई है — " क्राइम डज़ नोट पे ब्रदर "।[44] चन्दन के वृक्ष पर सांप होते हैं, इस मतलब की कहावत संस्कृत में उपलब्ध होती है। इसी उपन्यास में रूपवती-लावण्यवती कली को केन्सर होता है, उस बात को इस प्रकार अभिव्यक्त किया गया है — " क्या सचमुच ही ऐसा घातक रोग-ब्याल उस चन्दन-विटप से लिपट गया होगा ? "[45] गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर के बिना शांतिनिकेतन कैसा लगता है, उसके संदर्भ में क्षितिमोहन बाबू कहते हैं — " वृन्दावने कृष्ण नाई तो किछुई नाई। "[46] दो स्थानों के बीच कम अंतर बताने के लिए एक स्थान पर कहा गया है — " गोकुल की बेटी मथुरा ब्याही। "[47] यदि किसी चीज़ की प्राप्ति की संभावना कहीं न हो तो सामान्य तौर पर कहा जायेगा कि यहां आपको कुछ मिलनेवाला नहीं है। ऐसी स्थिति के सन्दर्भ में अहल्या एक स्थान पर अपने पिता से कहती है — "भला इस सड़ी-सी बाजार में आपको क्या मिलेगा ? उलटे बांस बरेली को। "[48] एक बार यदि किसी व्यक्ति को किसी बात में धोखा होता है तो वह दूसरी बार अधिक ध्यान रखता है। इस सन्दर्भ में कहावत है — " दूधका जला छाछ भी फूंक-फूंककर पीता है।" इस कहावत का उपयोग एक स्थान पर यों हुआ है — " अहल्या चुप रही। एक बार दूध की जली थी, अब मठा भी फूंक-फूंककर पी रही थी। "[49] जब कोई क्रिया पहली बार संपन्न होती है तो उसमें लोगों का उत्साह देखते बनता है। इस संदर्भ में एक कहावत मिलती है — " नया मुल्ला नौ बार नमाज़ पढ़े "। परंतु शिवानी

ने इस सन्दर्भ में एक नयी कहावत का प्रयोग किया है — "नयी गाय को नौ पूले घास " [50] । इसी तरह पहाड़ों की एक कहावत है — "औरत को न दिखाये बाजार और मर्द को न दिखाये भंडार । " [51] गुजराती में एक कहावत प्रचलित है — " पुरी एक अंधेरी ने गंडू राजा , टके सेर भाजी टके सेर खाजा । " शिवानीजी में भी इसी प्रकार की एक कहावत आयी है — " अंधाधुंध के राज में गधा भी पंजीरी खाता है । " [52] निम्न प्रकार की हैसियत को संकेतित करने के लिए शिवानीजी ने एक कहवत का प्रयोग किया है — "क्या पिद्दी , क्या पिद्दी का झोल । " [53] कहीं-कहीं पर "झोल" के स्थान पर "शोरबा" शब्द का प्रयोग भी होता है । पहाड़ों में तथा ग्रामीण परिवेश के ग्वारों में "गुवार्य़ी" कहावतें बहुतायत से मिलती है । "चौदह फेरे " उपन्यास की अहल्या अपने मन-पसंद लड़के से शादी करने के लिए घर से भाग जाती है , तब सुभद्रा भौजी कर्नल से कहती है — " कब तक गू टकोगे , लल्ला ? । छोकरी तो तुम्हारी मूँछें नीची कर गयी । " [54]

इसी तरह भाषा में नाविन्य की सृष्टि के लिए लेखिका ने अनेक नये मुहावरों का प्रयोग भी किया है । यद्यपि उनके सभी उपन्यासों में ऐसे प्रयोग प्राप्त होते हैं , तथापि यहां उदाहरण के रूप में "कृष्णकली" तथा "चौदह फेरे " उपन्यास से कुछ उदाहरणों को रखा गया है —

सोने के अंडे देनेवाली बतख-सी पत्नी , अधेड़ अंगूठा पकड़ा, घृणित व्यक्तित्व को घुटककर नीलकंठ बनना , सटक सीताराम हो जाना , सेवाव्रत की दुरस्य धारा पर चलना , इजिप्शियन ममी के-से ताबूत में बन्द रहना , घर में चलनेवाली इण्टरेस्टिंग मैटिनी , किसी सुंदरी के गालों के गड्ढों में धंस जाना , आँखों के इंचीटेप से नापना , ठंडे गप्पों के साथ यादों को घुटकना , सनबाथ के रिच्युअल का चलना, किसी चीज की वीकनेस होना , हठयोगी की-सी कंटक-शैया मात्र का रह जाना , कुंआरे अल्हड़ जीवन के माघ को भी फागुन बना देना ,

किसीका दुर्वासा होना , प्रभाव का चेक भुनाना , कुंजड़ोंवाली लड़ाई का चलना , शंखघोष का एलार्म बजना , मंझियों वाला हो जायेगा कहना , जीभ को जिमनैस्टिक कराना , अधरों पर सील मोहर लगाना, बैसाखियों पर टिका यौवन , लखटकिया नाम धरना , हनीमुनिया जाना , स्मृतिद्वार का जंग लगा ताला खोलना , शैडो करना [पीछा करना] ; मिल्क आफ ह्युमन काइण्डनेस का छलकना ; तुरखुरिया-सा खड़ा हो जाना , किसीका धुआं देखना [बुरा चाहना] , मुक्त हस्त से दान देना [खुले हाथों दान देना] , हृदय के ताले में किसीकी कुंजी का घूमना , डाराकिरी करना , होईचोई मच जाना , बेरहमी का इंजेक्शन देना , जन्म-मरण की पेंगें लेना , जब देखो तब अपनी शहनाई छेड़ देना , श्रद्धा के मंदिर का ढह जाना , पूरी बात की पुड़िया एकसाथ न खोलना , दूसरों की गरदनों पर पांव रखकर आगे बढ़ जाना , आंखों ही आंखों में कपड़े उतार लेना , स्मृति के सूखे बिरवे में पानी पड़ना , परायी गाय का गोदान करा देना , आंखों में होली का अबीर-गुलाल छलक आना । [56]

5.06 : निष्कर्ष :

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भाषागत सौन्दर्य से औपन्यासिक शिल्प में अभिवृद्धि होती है । यद्यपि शिवानीजी एक लेखिका है , परंतु उनका गद्य भी काव्यमय है । अतः उपन्यास में काव्यत्व को ढूंढनेवाले पाठकों को शिवानीजी के उपन्यास निराश नहीं कर सकते । उनकी नूतन भाषाभिव्यंजना उनके गद्य की एक खास विशेषता है । उपन्यास केवल कहानी नहीं है , वह कहानी से कुछ ऊपर की वस्तु है । उपन्यास को कहानी से अलगाने वाले जो व्यावर्तक कारक हैं उनमें भाषागत कला भी एक है । प्रस्तुत अध्याय में नये उपमान, नये रूपक , नये विशेषण , नये विशेषण पदबंध तथा कहावत और मुहावरों के नूतन प्रयोगों के द्वारा यह समेकित किया गया है कि शिवानीजी की भाषा नूतन-भाषाभिव्यंजना की दृष्टि से सक्षम है ।

==== XXX ====== XXXXX ======

:: सन्दर्भानुक्रम ::

§1§ अठारह सूरज के पौधे : रमेश बक्षी : पृ. 15 ।

§2§ अन्तराल : मोहन राकेश : पृ. 106 ।

§3§ दिल एक सादा कागज़ : डा. राही मासूम रज़ा : पृ. 188 ।

§4§ लाल टीन की छत : निर्मल वर्मा : पृ. 79 ।

§5§ कृष्णकली : पृ. 22 ।

§6§ मोडर्न क्रिटिसीज़्म एण्ड थियरी : एडिटेड बाय : डेविड लोज : पृ. 444 ।

§7§ कृष्णकली : पृ. 70 ।

§8§ "हिन्दी उपन्यास : कुछ उपलब्धियाँ " : पृ. 138 ।

§9§ द्रष्टव्य : समीक्षायण : पृ. 30 ।

§10§ "देसाई-सतसई " के लिए संकलित दोहों में से : डा. देसाई की काव्य-डायरी से उद्धृत ।

§11§ द्रष्टव्य : समीक्षायण : पृ. 167 ।

§12§ भैरवी : पृ. 36 , 103 ।

§13§ पाथेय : पृ. 114 ।

§14§ कृष्णकली : पृ. क्रमशः 3, 4, 6, 8, 8, 10, 12, 12, 15, 15, 16, 17, 18, 80, 81, 28, 31, 34, 38, 58, 58, 66, 69, 79, 90, 90, 91, 91, 97, 98, 99, 105, 121, 121, 125, 152, 152, 154, 154, 163, 163, 177, 178, 180, 181, 181, 182, 193, 197, 215, 217, 222, 223, 225 ।

§15§ चौदह फेरे : पृ. क्रमशः 5, 5, 11, 12, 12, 13, 13, 14, 15, 16, 22, 23, 23, 25, 25, 26, 27, 29, 32, 38, 39, 41, 51, 52, 53, 57, 59, 61, 65, 74, 81, 85, 86, 92, 95, 97, 100, 101, 102, 102, 102, 103, 103, 104, 118, 119, 121, 126, 127, 131, 137, 146, 149, 156, 157, 160, 163, 165, 168, 180, 196, 196, 197, 204, 212, 215, 216 ।

§16§ श्मशान चम्पा : पृ. क्रमशः 11, 12, 15, 11, 12, 14, 14, 15, 16, 16, 16, 16, 15, 19, 19, 19, 20, 22, 24, 25, 26, 28, 28, 28, 30, 30, 32, 32, 33, 33, 33, 33, 33, 35, 35, 40, 41, 46, 50, 48, 52, 55, 55, 58, 59, 62, 74, 75, 81, 81, 81, 82, 82, 83, 87, 91, 92, 94, 94, 94, 96, 96, 97, 98, 105, 105, 106, 106, 107, 108, 112, 113, 113, 113, 115, 129 ।

§17§ उपप्रेती : पृ. क्रमशः 9, 13, 16, 17, 18, 18, 19, 21, 22, 23, 23, 23, 25, 26, 27, 29, 30, 30, 30-31 , 31, 31 ।

§18§ दो सखियां : पृ. क्रमशः 37, 38, 40, 42, 44, 45, 45, 46, 47, 47, 48, 49, 50, 51, 51, 51, 55, 56, 61, 61 ।

§19§ विषकन्या : पृ. क्रमशः 7, 7, 7, 7, 7, 7, 8, 10, 10, 10-11, 11, 12, 13, 14, 16, 16, 17, 18, 18, 18, 19, 20, 20, 20, 21, 21, 25, 25, 31, 31, 32, 32, 33, 33, 33, 35, 36, 36, 36, 36, 37, 38, 38, 39, 39, 40, 40, 41, 42, 44, 45, 48, 49, 57, 57, 56, 56 ।

§20§ मार्मिक : पृ. क्रमशः 10, 10, 10, 11, 11, 11, 11, 11, 12, 12, 12, 15, 15, 15, 15, 15, 16, 16, 17, 17, 19, 19, 20, 23, 23, 26, 26, 27, 28, 28, 29, 30, 31, 31, 32, 34, 35, 36, 40, 41, 41, 42, 42, 44, 44, 46, 47, 48 ।

§21§ तर्पण : पृ. क्रमशः 49, 49, 49, 49, 50, 50, 50, 51, 52, 52, 52, 52, 52, 53, 54, 54, 55, 56, 56, 56, 57, 59, 59, 60, 60, 60, 62, 62, 62, 63, 63, 64, 66, 68, 70, 71, 71, 73, 73, 73, 74, 74, 74, 75, 75, 75, 76, 76, 76, 77, 77, 78, 78, 78, 79, 79, 80, 81, 82, 83 ।

§22§ जोकर : पृ. क्रमशः 84, 85, 85, 86, 87, 88, 89, 90, 90, 90, 92, 92, 93, 93, 99, 99, 101 ।

§23§ द्रष्टव्य : हिन्दी पाथेय : डा. मोहनलाल उपाध्याय : पृ. 53 ।

§24§ द्रष्टव्य : समीक्षायण : पृ. 161-162 ।

§25§ विशेषण पदबंध 1-5 : विषकन्या : पृ. क्रमशः 12, 13, 20, 40, 45 ।

§26§ विशेषण पदबंध : ~~xxxxxxx~~ 6–10 : माणिक : पृ. क्रमशः 15, 15, 17, 36, 41 ।

§27§ विशेषण पदबंध : 11–13 : तर्पण : पृ. क्रमशः 52, 52, 78 ।

§28§ " : 14–15 : जोकर : पृ. क्रमशः 90, 101 ।

§29§ " : 16–24 : श्मशान चम्पा : पृ. क्रमशः 7, 11, 14, 18, 26, 36, 45, 41, 86 ।

§30§ विशेषण पदबंध : 25–28 : उपप्रीती : पृ. क्रमशः 13, 19, 22, 31 ।

§31§ " : 29–33 : दो सखियाँ : पृ. क्रमशः 37, 51, 55, 56, 61 ।

§32§ विशेषण पदबंध : 34–46 : भैरवी : पृ. क्रमशः 6, 8, 17, 18, 34, 38, 43, 53, 75, 78, 82, 120, 86 ।

§33§ विशेषण पदबंध : 47–53 : मायापुरी : पृ. क्रमशः 5. 23, 56, 68, 74, 121, 139 ।

§34§ विशेषण पदबंध : 54–69 : कालिन्दी : पृ. क्रमशः 17, 22, 26, 31, 45, 67, 81, 82, 89, 101, 134, 138, 142, 175, 183, 210 ।

§35§ विशेषण पदबंध : 70–91 : विवर्त : ~~xx~~ पृ. क्रमशः 10, 11, 14, 14, 15, 15, 15, 17, 18, 19, 20, 24, 24, 24, 25, 26, 28, 28, 30, 31, 32, 45 ।

§36§ विशेषण पदबंध : 92–97 : तीसरा बेटा : पृ. क्रमशः 69, 69, 70, 71, 72, 72 ।

§37§ विशेषण पदबंध : 98–106 : सुरंगमा : पृ. क्रमशः 5, 9, 9, 16, 29, 40, 41, 47, 53 ।

§38§ विशेषण पदबंध : 107–111 : गैंडा : पृ. क्रमशः 13, 14, 23, 34, 36 ।

§39§ विशेषण पदबंध : 112–117 : कैंजा : पृ. क्रमशः 8, 9, 15, 18, 20, 25 ।

§40§ विशेषण पदबंध : 118–150 : कृष्णकली : पृ. क्रमशः 15, 17, 17,

22, 28, 32, 32, 60, 70, 73, 82, 90, 93, 104, 107, 110 , 119, 124, 132, 135, 138, 142, 146, 149, 149, 162, 175, 178, 201, 216, 12, 17, 21, 62 ।

§41§ विशेषण पदबंध : 151-171 : चौदह फेरे : पृ. क्रमशः 5, 5, 7, 12, 16, 12, 22, 23, 32, 34, 50, 59, 59, 93, 121, 144, 153, 168, 172, 185, 186, 193 ।

§42§ विशेषण पदबंध : 172-181 : कृष्णवेणी : पृ. क्रमशः 10, 20, 7, 7, 11, 13, 22, 33, 39, 41 ।

§43§ विशेषण पदबंध : 182-186 : कस्तूरी मृग : पृ. क्रमशः 11, 12, 23, 33, 38 ।

§44§ कृष्णकली : पृ. 115 §45§ वही : पृ. 217

§46§ चौदह फेरे : पृ. 41

§47§ से §54§ : चौदह फेरे : पृ. क्रमशः 68, 117, 151, 173, 175, 190, 215, 217 ।

§55§ कृष्णकली : पृ. क्रमशः 22, 23, 33, 43, 50, 60, 62, 70, 80, 89, 92, 93, 117, 118, 132, 133, 165, 179, 183, 187, 196, 202, 204, 210, 214, 214, 216 ।

§56§ चौदह फेरे : पृ. क्रमशः 10, 10, 27, 26, 37, 47, 59, 107, 111, 113, * 122, 170, 186, 188, 214, 220 ।

====== XXXXXXX =========
====== XXXXXX =========